ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

अइल किৰण OIL KIRAN | 2016 | वर्ष 13 | अंक 21

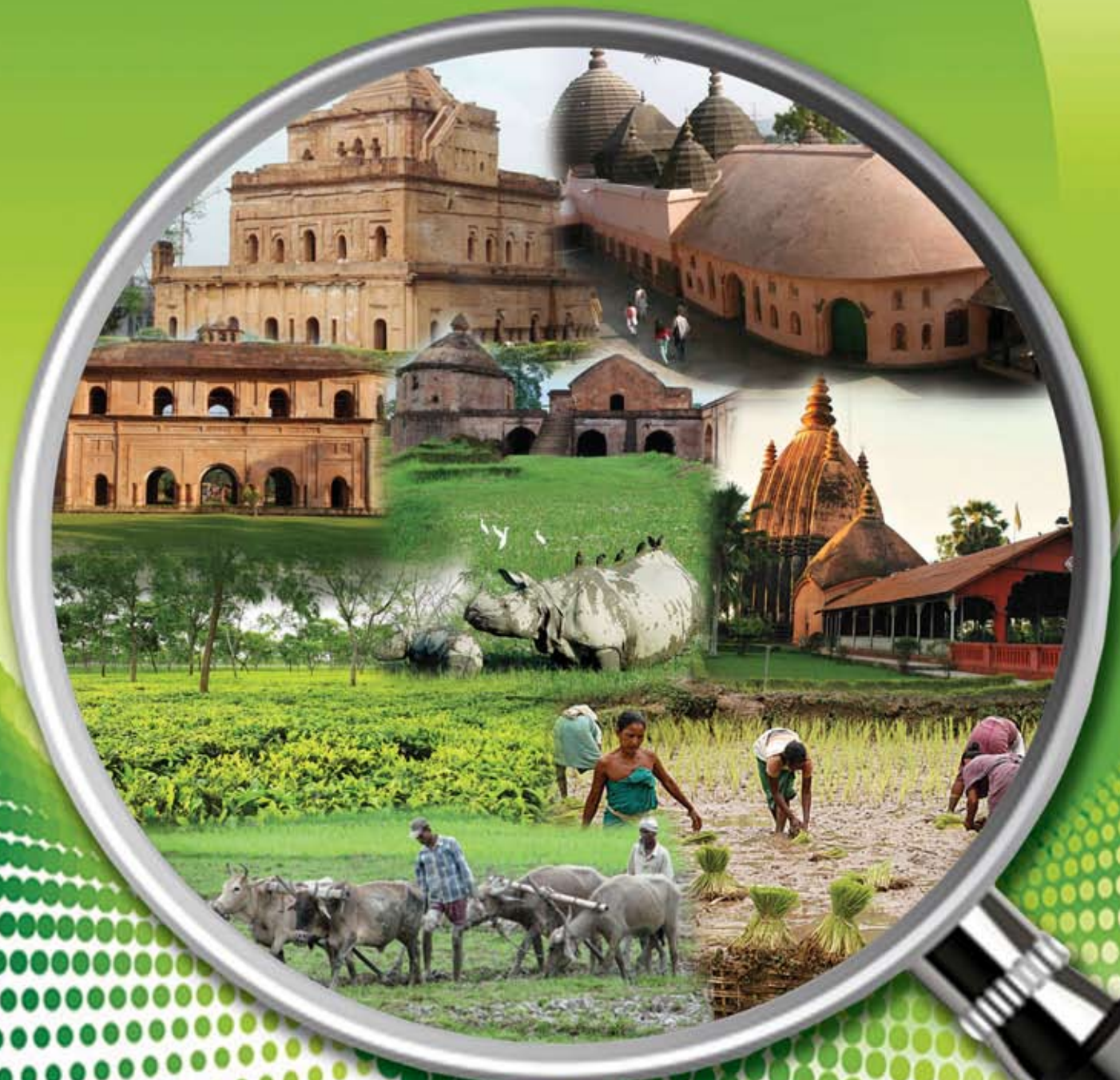

अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की लेखनी से

भाषा मनुष्य की सर्जन शक्ति का एक अनुपम उदाहरण है, यह सिर्फ जो है उसे ही व्यक्त नहीं करती या सिर्फ उसे ही नहीं रचती है वरन यह मनुष्य और मानवता की तमाम संभावनाओं को भी रचती है। आज के समय में यह रचनाशीलता बहु भाषिक है। आज विश्व में लगभग सात हजार भाषाएं प्रयोग की जाती है। आज हम एक बहु भाषिक दौर में जी रहे हैं। अगर हम इसे भारत के संदर्भ में देखें तो यह एक सामान्य सी बात है क्योंकि भारत भाषिक रूप से भी एक विविधतापूर्ण देश है, यहां का हर नागरिक कम से कम दो भाषाएं तो जानता ही है, बोलने के स्तर पर।

अभी हाल ही में मैं अपने सहयोगियों के साथ अरूणाचल प्रदेश की यात्रा पर था, वहां पर उद्घाटित एक तथ्य ने मेरी सोचने की दिशा ही बदल दी। सामान्य सी बातचीत के क्रम में मुझे यह पता चला कि अरूणाचल में बहुत सी बोलियां बोली जाती है जो हिन्दी की कहावत ''कोस-कोस पे पानी बदलै सात कोस पे बानी'' को चरितार्थ करती है। अपनी इस जिज्ञासा को दूर करने के लिए कि फिर ये लोग अपना संवाद कैसे करते होंगे या फिर इनकी संपर्क भाषा क्या है, मैंने वहीं के एक स्थानीय व्यक्ति से पूछा तो उसने मुझसे कहा कि हम लोग हिन्दी सीखते हैं और एक दूसरे से हिन्दी में ही बात करते हैं, सिर्फ इस एक वाक्य ने मेरे सोचने की दिशा बदली दी और तब मुझे सही मायनों में हिन्दी की शक्ति, सामर्थ्य, रचनाशीलता के बारे में पता चला। अपने अनुभवों से मैं यह कह सकता हूँ कि संपूर्ण भारत को आपस में जोड़ने और पूरे भारत की संपर्क भाषा बनने में हिन्दी पूर्णत: सक्षम है। जय हिन्द।

प्राणजित डेका

(प्राणजित डेका)

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ऑयल

सम्पादकीय

हिन्दी जगत में हिंदी के भूत, वर्तमान और भविष्य को लेकर काफी लंबी चर्चायें चलती रहती है। सभी विद्वान इसके भविष्य को सुरक्षित करते हुए नजर आयेंगे। इन वहमों को देखने सुनने और समझने से मन में एक प्रश्न उठता है कि क्या सही में हिन्दी का भविष्य अंधकारमय है, क्या भारत में अंग्रेजी हिन्दी को विस्थापित करने की प्रक्रिया में है। जब आप भी इन प्रश्नों पर विचार करेंगे तो एक बार तो यही लगेगा कि यह सच है परंतु अगर आप के सामने ग्रामीण भारत की तस्वीर है तो आप इससे सहमत नहीं हो पायेंगे।

भारत, असल में अपनी ग्रामीण अर्थव्यवस्था, ग्रामीण जन में ही बसता है और भारत का ग्रामीण जन आज भी अंग्रेजी को 'गिटर पिटर' की भाषा ही मानता है, जो भाषा तो है परंतु जिसमें हमारी संवेदनाएं नहीं है। यह अलग बात है कि हमने या हमारे ग्रामीणों ने इस भाषा के बहुत से शब्द अपना लिए है। और इसी अपनाने में भाषा का संवर्धन भी होता है। आज जब टीवी पर विज्ञापनों में कहा जाता है कि 'दिल मांगे मोर' तो यह भी हिन्दी का ही एक रूप है। आत्मसात करने की शक्ति ही हिन्दी को लगातार विकसित करती जा रही है। संपूर्ण भारत में हिन्दी स्वत:स्फूर्त ढंग से ही भारत की संपर्क भाषा बनती जा रही है और आज आप भारत के किसी भी कोने में चले जाएं तो आप का काम हिन्दी बोलने से आराम से चल जाएगा। इस विकसित हो रही हिन्दी की व्याकरणिक संरचना पर मेरे हिसाब से अभी ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है, समय के साथ-साथ यह भी ठीक हो जायेगी।

आज संपूर्ण भारत में हिन्दी का विकास उस नवजात नदी की तरह है जो अपने मार्ग में आने वाले अवरोधों को स्वत: ही हटाते हुए चल रही है। इन संगोष्ठियों, सभाओं में उत्पन्न विचार हिन्दी के एक ही पक्ष को उजागर करते हैं जबकि इसका दूसरा पक्ष ज्यादा धवल है, जिस पर हमें ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है।

जय हिन्द।

(डॉ. शैलेश त्रिपाठी)
सहायक हिन्दी अधिकारी

इस अंक में

मन बुद्धि शरीर और आत्मा का सामंजस्य-योग	1
'सक्षम'-एक एहसास	2
कोई मतवाला मंजिल तक / कोई दूर खड़ा दे आमन्त्रण	3
हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबंध	4
सिन्दूर	5
उत्तर पूर्वी भारत का प्राकृतिक सौन्दर्य और बचाव के उपाय / हमारा डिग्बोई नगर और उसकी कला संस्कृति	7
विदा के क्षण / बेटा और बेटी	8
'हिन्दी' से 'हिंदुस्तानी' तक (भारत के मूलतत्व का पुन: आविष्कार)	9
हिंदी राजभाषा राष्ट्रभाषा या विश्वभाषा	11
अजनबी / मेरी अभिलाषा / पानी न होता	13
माँ झूठ बोलती है... / जीवन का महत्व	14
हिंदी व मातृभाषा उतनी ही जरूरी जितनी धनोपार्जन की भाषा / साँच	15
आदतें छोड़नी होगी अब / बचपन	16
जब अज्ञेय को कहा गया अनुवादक...	17
हिंदी हो चुकी अब विश्व भाषा	18
पूस की रात	19
ऑयल में हिन्दी माह/पखवाड़ा/सप्ताह का आयोजन	22
कलकत्ता शाखा में हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन	25
पाइपलाइन विभाग में हिन्दी समारोह-2016 का आयोजन	26
राजस्थान परियोजना, जोधपुर में राजभाषा समारोह आयोजित	28
राजस्थान परियोजना, जोधपुर 'राजभाषा शील्ड' प्रथम स्थान से सम्मानित	28
राजस्थान परियोजना, जोधपुर "राजभाषा मुकुटमणि शील्ड" से सम्मानित / कलकत्ता शाखा को पुरस्कार एवं प्रशस्ति फलक	29

सलाहकार
श्री प्राणजित डेका
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)
श्री दिलीप कुमार भूयां
उप महाप्रबन्धक (जन संपर्क)

प्रधान सम्पादक
डॉ. शैलेश त्रिपाठी, सहायक हिन्दी अधिकारी, दुलियाजान

संपादक मंडल
डॉ. रमणजी झा, मुख्य प्रबंधक (रा. भा.) नोएडा
डॉ. वी. एम. बरेजा, वरिष्ठ प्रबंधक (रा. भा.) कोलकाता
श्री हरेकृष्ण बर्मन, वरिष्ठ प्रबंधक (रा. भा.) जोधपुर
श्री नारायण शर्मा, उप प्रबंधक (रा. भा.) गुवाहाटी

सम्पादन-सहयोगी
श्री दीपक प्रसाद, श्री विजय कुमार गुप्ता, श्री दिगन्त डेका

पत्रिका में प्रकाशित लेख/रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क एवं आंतरिक वितरण हेतु प्रकाशित।

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड
डाकघर : दुलियाजान 786 602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

मुद्रक: सैकिया प्रिण्टर्स, दुलियाजान, दूरभाष : 9435038425

मन बुद्धि शरीर और आत्मा का सामंजस्य – योग

राजीव कुमार पाण्डेय
बिजय कुमार बनर्जी

मन, बुद्धि, शरीर और आत्मा का सामंजस्य एक संस्कार है। आदते हमसे बनती है। आदतों से शरीर और मन का संचालन होता है। व्यक्ति का जीवन चार स्तर शरीर, बुद्धि, मन और आत्मा में बंटा है। सब स्तरों में सन्तुलन अनिवार्य है। ये सर्वविदित है कि मन सदा चंचल होता है। शरीर इंद्रियों को इंगित करता है तो कार्य का निष्पादन करते है, इंद्रिया मन के द्वारा संचालित होती है जबकी मन बुद्धि के द्वारा। परंतु वास्तविक रूप में ऐसा प्रतित नहीं होता। हमारी दिनचर्या में मन बुद्धि से बलवान होता है। किसी भी युग में मन के द्वारा काम करना उचितकर नहीं माना गया है, परंतु अगर सिर्फ बुद्धि के द्वारा काम किया जाय तो कार्य तो सिद्ध होगा परंतु मनुष्य का मन जीत पाना सम्भव नहीं होगा। इसलिए मन और बुद्धि का सामंजस्य बहुत जरुरी है।

क: मन बुद्धि से बलवान
ख : बुद्धि
मन से बलवान

बुद्धि का कार्य है निर्णय तर्क के माध्यम से उचित / अनुचिता में भेद करना, लेकिन मन विवेकहिन होने के बावजूद बुद्धि पर हावी हो जाता है। मन हमेशा इंद्रियों सुखों में लिप्त रहना चाहता है और अभी का सोचता है, परिणाम के बारे में नहीं सोचता। बुद्धि मन को दिशा निर्देश देने का प्रयास करता है, परंतु चंचल मन अपनी आदतों / संस्कारों के कारण क्षणीक सुख के लिये सीधे ही इंद्रियों को कार्यरत रखता है (उपर चित्र में 'क' से इंगीत)। मन बुद्धि के द्वारा तभी संचलित होगी जब बुद्धि मन से बलवान होगी (उपर चित्र मे 'ख' से इंगीत)।

अगर मन बुद्धि से नियंत्रित ना हो तो मन अपने स्वभाव के अनुरुप अवनति की ओर अग्रसर हो जायेगा। मन संशयात्मक ही रहता है, पर बुद्धि उस संशय को दूर कर देती है। बुद्धि एक ऐसा धागा है जो मन को पिरो के रखता है और हमारे संस्कारों को सवारता है। अब प्रश्न ये है की बुद्धि मन को नियंत्रित कैसे करे। सतत प्रयास, प्राणायाम, ध्यान और स्वाध्याय के द्वारा बुद्धि को सुद्रीढ़ कर सकते हैं। यह साधना व अभ्यास से संभव होता है।

हर जीवन का उद्देश्य सुख और शांति है। जो की बड़ी ही सहजता से इन गुणों को अपने जीवन में अपना के प्राप्त किया जा सकता है :

1. संतोष से जीवन यापन 2. सबके प्रति सहिष्णुता 3. क्षमा 4. दया व प्रेम भाव 5. विनयी स्वभाव 6. मैत्रीपूर्ण आचरण 7. परिवर्तन को अपनाना 8. सच्चरित्रता और नैतिकता 9. कम व मिठा बोलना 10. सात्विक भोजन 11. नकारात्मक विचार 12. अध्यात्म से लगाव पर नियंत्रण ये बहुत गुढ़ रहस्य नहीं है जिसको अपने जीवन से महसूस न किया जा सके। इन आचरणों को अपना कर मनुष्य का मन पवित्र हो जाता है, और मन बुद्धि और शरीर एक ही दिशा में कार्यरत हो जाती है। बुद्धि जीवन को सही तरीके से संचालित करने का मुख्य आधार है। जीवन सरल और सुखी बनाने के लिए बुद्धि का सदैव उपयोग करना अनिवार्य है। एक सशक्त बुद्धिमान इन्सान ही जीवन को अर्थमय दिशा प्रदान करता है और अपने मन बुद्धि शरीर और आत्मा को एकाकार करता है।

'सक्षम'- एक एहसास

- **यादव उपाध्याय**
सहायक एल.पी.जी. विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड

हर एक कर्मचारी (Employee) जो ऑयल इंडिया की सहायता से प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं; उन्हे कम या ज्यादा कुछ न कुछ सिखने का अवसर जरूर मिलता है। पर सिखने के बाद कितने लोग इसे अपने जीवन में या कर्मक्षेत्र में उपयोग करते हैं। उसे ध्यान देना अति आवश्यक है। ठीक उसी प्रकार मैं भी उसी पंक्ति में खड़ा होकर 29/08/2016 को पहुँच गया सिलिगुड़ी। जहाँ हमें अपने ग्रुप के साथ भेजा गया था, एक सप्ताह के प्रशिक्षण के लिए। हम पहुचें 29 जुलाई 2016 को दोपहर 01.20 बजे। तिनिसुकिया से प्राय 16 घण्टे की राजधानी रेलगाड़ी की सफर समाप्त करके पहुचें हम न्यू-जलपाईगुड़ी। वहाँ पहले से ही मौजूद थे, श्रीमान सिमान्त गोस्वामी और श्रीमान मृनाल कुमार दास। हम सब एक ही रेलगाड़ी पर थे मगर बोगी अलग-अलग, इसी के चलते हम सबको एक साथ होने में उन्होंने हमारी मदद की। सभी लोग एक ही स्थान में एकत्रित होने के बाद हमें ले जाया गया, दार्जिलिंग के सालबाड़ी नामक जगह पर; जहाँ एक नई सी बनाई गई **'होटल ग्रीनवुड्'** में हमारे स्वागत के लिए बैठे थे कई लोग। जिसमें मुख्य भूमिका थी उसी होटल की अधिकारियों की। जो हमें भारतीय सभ्यता की परम्परा को साथ में लिए एक-एक का स्वागत कर रहीं थीं। रास्ते के बगल से तथा दार्जिलिंग जाने वाली टॉय ट्रेन (जो विश्व विख्यात है) की पटरी से सटा हुआ पाँच मंजिला होटल, साथ ही अगल-बगल का दृश्य अति रोचक था। कार्यसूची को आगे रखते हुए हमने अपना कमरा लिया। प्रत्येक दो प्रशिक्षार्थी को एक कमरा दिया गया, जो कि आधुनिक तकनीकी के प्राय: सभी उपक्रम से सजा हुआ था। मैंने आई टी (IT) विभाग के एक सहकर्मी को साथ लिया। वह बड़ा ही दिलदार और मिलनसार है। उसके विषय में जितना भी कहूँ तो कम ही होगा। एसे तो कहते हैं कि इस पृथ्वी पर कोई भी आदमी खराब या अच्छा नहीं होता, उसे अच्छा या खराब होने को मजबूर करता है उसका व्यवहार। साथ ही यह व्यवहार जन्मगत नहीं होता, अर्थात कोई भी व्यक्ति इसे जन्म से लेकर नहीं आता। वह तो इस संसार में आने के बाद उसके संगत का असर माना जाता है। जो जिस संगत में रहता है, वह मजबूर हो जाता है उसे अपनाने में। और इसी तरह यह उसका स्वभाव बन जाता है।

अगले दिन अर्थात 30 अगस्त 2016 को सभी लोग कार्यसूची के अनुसार तैयार हो गये और सभी ने उत्सुक्ता से प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया। इसमें **'रिफोर्म प्रयास'** का अलग ही शैली से शुरु हुआ कार्यक्रम जो पहले परिचय पर्व से श्रीगणेश किया गया। श्रीमान किशोर कुमार जी अपना कार्यक्रम लेकर सामने निकले; साथ दे रहे थे उनके सहयोगी श्रीमान सिमान्त गोस्वामी और श्रीमान मृनाल कुमार दास। इसी तरह कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाते गये, और हमें दिन व दिन कुछ नये ज्ञान देते गये। शायद ही कोई ऐसा प्रशिक्षार्थी होगा जो इस कार्यक्रम का उपयोग न किया हो। अगर किसी को लगे कि उसे आलस्य सता रहा है, इसका ज्ञान होते ही तुरन्त प्रशिक्षक कुछ नये अंदाज में नई कर दिखाने की शुरू कर देते। इसी प्रकार कार्यक्रम को नये-पुराने अंदाज में सजाते हुए, दिन बितता ही गया, और हम कार्यक्रम का आन्नद लेते गये।

विषय सूची के पंक्ति में एक और वाक्य समाया हुआ था, Industrial visit to Darjeeling सभी की नजर उस पंक्ति में जाकर रूक जाती थी। कारण हम थे असम के रहने वाले। **'असम'** का अर्थ असमतल है यहाँ की भूमि। परन्तु दार्जिलिंग की तुलना में तो कई गुणा समतल है। साथ ही प्राकृतिक सौंदर्य जो विश्व-विख्यात है। देश-विदेशों से यहाँ पर्यटक की कतारें लगी रहती है, प्राय: बारह ही महीने। परन्तु यहाँ के लिए उत्कृष्ट समय अक्तूबर से लेकर मार्च तक। प्रशिक्षण के दौरान हमें वहाँ भी ले जाया गया और हमने प्राकृतिक सौदर्य का पूर्ण आन्नद उठाया।

प्रशिक्षण के दौरान हमें सिखाया गया -

1. अपने दक्षता (Skill) को कैसे धार (Sharp) करना चाहिए, जो एक कहानी के माध्यम से समझाया गया।
2. ज्ञान को पुर्नावृति करना।
3. घमंड को त्यागना।
4. संस्था (Organization) की संज्ञा - साधारण व्यक्ति एक साथ मिलकर कोई असाधारण कार्य करने में सफल होते हैं; तो उसे संस्था कहते हैं।

5. भावढंग (Attitude) और व्यवहार (Behavior) को गुरुत्व देना।
6. साकारात्मक / नाकारात्मक सोच की उपयोगिता / अनुपयोगिता।
7. तनाव का फार्मूला (The formula of stress)
   आकांक्षा – वास्तवीकरण = अन्तर x उस पर अपनी जोर तनाव
   Expectation – Reality=Difference x Importance I give stress
8. परिणाम का फार्मूला (The formula of Results)
   साधारण ज्ञान + आभ्यासिक ज्ञान ⟶ दक्षता ⟶ ढंग ⟶ परिणाम
   Simple knowledge + Practical knowledge ⟶ Skill + Attitude Result.
9. मादक द्रव्य का असर।
10. अच्छे रहने के उपाय।
11. योग की भूमिका।
12. समुदाय (Team) की प्राथमिकता।
13. C.S.R के विषय में सामान्य ज्ञान।
14. RTI के विषय में सामान्य ज्ञान।
15. समय का सदुपयोग।
16. लिखित और बातचीत की नीति।
17. सम्बन्ध की गाँठ।
18. महिला सहकर्मी के साथ कथित व्यवहार में सावधान।
19. आर्थिक प्रबन्ध।
20. सफलता की पाँच कुंजी

क) दिशा (Direction)
ख) दिशा के प्रति समर्पण (Dedication to the direction)
ग) संकल्प (Determination)
घ) अनुशासन (Discipline) और
ङ) समय की पूर्वीय स्थिति (Time Orientation)

अनिता निहालानी की कुछ कविताएं

कोई मतवाला मंजिल तक

फूल उगाये जाने किसने
गंध चुरायी है सबने,
स्वेद बहाया जाने किसने
स्वप्न सजाये हैं सबने।

कोई मतवाला मंजिल तक
जाने का दमखम रखता,
पीछे चले हजारों उसके
घावों पर मरहम रखता।

राह बनायी जाने किसने
कदम अनेकों के पड़ते,
देख उसे ही तृप्त हो रहे
पहुँचेगे, किस्से गढ़ते।

एकाकी ही लक्ष्य बेधता
भीड़ें सभी बिखर जाती,
जीवन को सतह पर छूकर
तृप्त हुई निज घर जाती।

स्वर्णिम कलश सा कोई चमके
आभा मंडित सब होते,
उसको हमने भी देखा है
दर्शन पाये यह कहते।

कोई दूर खड़ा दे आमन्त्रण

हर मिलन अधूरा ही रहता
हर उत्सव फीका लगता है,
कितना ही भरना चाहा हो
तुझ बिन घट रीता लगता है।

ज्यों बरस-बरस खाली बादल
चुपचाप गगन में खो जाते,
कह-सुन जीवन भर हम मानव
एक गहन नींद में सो जाते।

कितनीं मनहर शामें देखीं
कितनी भोरों को मन चहके,
सूनापन घिर-घिर आता फिर
कितने हों वन-उपवन महके।

कोई दूर खड़ा दे आमन्त्रण
पर नजर नहीं वह आता है,
जाने किस लोक का वासी है
जाने किस सुर में गाता है।

पलकें हो जाती हैं भारी
नीदों में स्वप्न जगाते हैं,
इक भ्रम सा होता मिलने का
जब भोर जगे मुस्काते हैं।

हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबंध

विषय: भारतीय सामाजिक परिदृश्य में 'बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ' की आवश्यकता एवं सार्थकता

हिमांशु डांगि
इआरपी विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान
प्रथम पुरस्कार – हिन्दी भाषी

(1) प्रस्तावना
(2) बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ की आवश्यकता
(3) बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ की सार्थकता
(4) भारतीय समाज में इसका स्वरूप
(5) उपसंहार

1) **प्रस्तावना**

''बेटी' एक अभिशाप नहीं अपितु वरदान है'' – माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शब्दों में यह वाक्य साक्ष्य हो जाता है, जब हम हाल ही में हुए ओलंपिक खेल समारोह में भारत के प्रदर्शन पर नजर डालते हैं। एक चांदी एंव दूसरा कास्य पदक दोनों ही भारत की बेटियों द्वारा अर्जित है। लेकिन जब हम भारत वर्ष में कन्याओं एवं बेटियों की वस्तु स्थिति की ओर यदि ध्यान अग्रसर करे तो, यह स्थिति किसी से छिपी नहीं कि भारत देश में महिलाओं की स्थिति दयनीय है। इसका सीधा सीधा मापदण्ड है – CHILD SEX RATIO अर्थात लिंग अनुपाती भारतीय CENSUS की रिपोर्ट के अनुसार लिंग अनुपात कुछ इस प्रकार है –

सं	सन्	लिंग अनुपात
1.	1991	1000 / 0945
2.	2001	1000 / 0927
3.	2011	1000 / 0918

वर्ष 0-6 के बच्चों का अनुपात प्रत्येक 1000 पुरुष लड़कों पर महिला एवं बेटियाँ।

2. **बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ की आवश्यकता**

सर्वे एवं CENSUS की रिपोर्ट से यह साफ-साफ सिद्ध होता है देश को महिलाओं एवं बेटियों के गिरते लिंग अनुपात के सुधार हेतु तुरंत प्रभाव से कार्य करने पड़ेंगे।

सन् 1991 : 1000/954 (लिंग अनुपात)
सन् 2001 : 1000/927 (लिंग अनुपात)
सन् 2011 : 1000/918 (लिंग अनुपात)

22 जनवरी 2015 : बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ योजना का भारत सरकार द्वारा आगाज

आज की तारिख 01 सितम्बर 2016 : महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा इसका अनुसरण एवं इसकी जिम्मेदारी लेना।

''बेटी पढ़ेगी घर पढ़ेगा घर पढ़ेगा।।
राष्ट्र पढ़ेगा। राष्ट्र पढ़ेगा राष्ट्र बढ़ेगा।।''

इसी नारे के साथ भारत वर्ष में यह क्रांति का आगाज हुआ।

यही स्थिति अगर चलती रही तो एक दिन ऐसा आएगा जब इस देश में लड़कों के लिए लड़कियों का मिलना कुबेर का खजाना मिलना जैसा हो जाएगा।

22 जनवरी 2015 को एक ऐतिहासिक कदम, जो कि भारत सरकार द्वारा लड़कियों एवं महिलाओं की सुरक्षा एवं सम्मान हेतु लिया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने।

बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ नामक योजना का शुभारम्भ किया तथा इस योजना के अतंर्गत यह सुनिश्चत किया कि बेटियों का ना केवल लिंग अनुपात बढ़ाया जाए अपितु उनकी वस्तु स्थिति को भी सुधारा जाए जो कि केवल उन्हें शिक्षित करके किया जा सकता है।

3 बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ की सार्थकता

''सत्य वचन'' ''ईश्वर ने सूर्य बनाने के बाद,
बची हुई रोशनी बेटियों को दे दी,
इसलिए जिस घर में बेटी है,
वह घर उसकी किलकारियों से रोशन है।''

यह तो भी जानते हैं एवं मानते हैं कि भगवान ने जननी की शक्ति केवल महिलाओं को ही प्रदान की है। लेकिन जब घर में बेटा पैदा नहीं होता तो उसका शोक मनाया जाता है, इससे यह भली भांति प्रतित होता है कि बेटियों को बराबर का दर्जा नहीं मिला है। यह कटु सत्य है जिसे भारतवर्ष हर दिन जी रहा है। इस प्रथा को जल्द से जल्द खत्म करना होगा नहीं तो हमारे देश को एक दीमक की तरह निगल जाएगी।

भारत सरकार ने माधुरी दिक्षित को बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ योजना का ब्रांड एमबेसेडर बनाया है तथा महिला एवं बाल

विकास मंत्रालय को इस योजना की बागडोर संभालने का दायित्व दिया है।

अब वह दिन दूर नहीं, जब बेटी लिखेगी भारत का इतिहास
अब वह दिन दूर नहीं, जब बेटी रचेगी भारत का स्वरूप
अब वह दिन दूर नहीं, जब बेटी बनेगी भारत की पहचान
अब वह दिन दूर नहीं, जब बेटी बनेगी भारत की शान

इस देश को एक राह की आवश्यकता थी जिसे इस योजना के अन्तर्गत हमें अभिभूत किया गया है। जब इस सार्थ को सिद्ध किया जाएगा तब हर देशवासी को गर्व होगा अपितु गौरवान्वित महसूस करेगा।

4. बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ का भारत वर्ष में आनेवाला स्वरूप।

प्रत्येक देश की बागडोर जितनी की पुरुष वर्ग के हाथ में है उतनी ही महिला वर्ग के हाथ में है। अगर देश का स्वर्णिम विकास यदि देखना है तो इसमें दोनो ही वर्गों को अपना पूरा पूरा योगदान देना होगा तथा एक-और-एक ग्यारह कहावत को पूर्वत : सिद्ध करना होगा।

बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ नामक योजना में इस स्वरुप को निम्न प्रकार से सिद्ध करने को कोशिश की गई है।

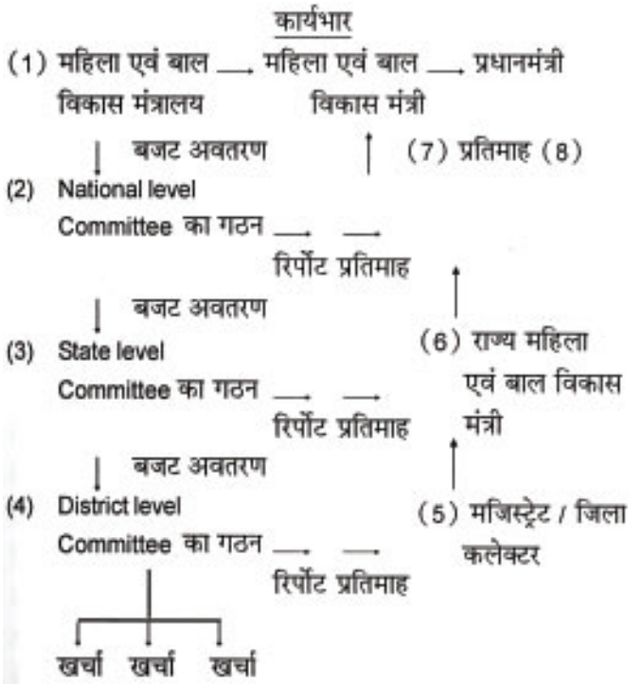

पिछले पेज पर अंकित डाईग्राम से भारत सरकार द्वारा यह सुनिश्चित करने की चेष्टा की गई है कि हर बेटी को उसका अधिकार मिले। हर बेटी को देश का प्यार मिले।

5. उपसंहार

अगर आने वाले समय में यदि देश, भारत सरकार द्वारा दी गई प्रणाली पर निरंतर अग्रसर रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हर देश वासी स्वत: ही कहने लगेगा कि -

''यह देश ना केवल वीर जवानो का है।
बल्कि यह देश वीरांगनाओं का भी है।।''

हमारा देश ही अकेला देश है दुनिया में जहाँ माँ स्वरुप को पूजा जाता है, उस देश में यदि महिलाओं की स्थिति दयनीय होना बड़ा ही दु:खद अहसास है। हम भारत देश वासी माँ की पूजा करते हैं और बेटी की भ्रूण में हत्या कर देते हैं उन लोगों को यह हमें बताना है।

''बेटी को बढ़ाना और पढ़ाना है।''

इसी के साथ।

हर रात की सुबह नई होगी।
हर बेटी की हालात नई होगी।
इस देश को तुम्हारी जरुरत है।
उस वक्त को तुम्हारी जरुरत है।
तुमसे जमाना है, यह बात सही होगी।
यह बात सही होगी।

जय हिंद जय भारत

''यह शुरुआत है''

सिन्दूर

- नारद प्रसाद उपाध्याय
भूविज्ञान एवं तैलाशय विभाग
दुलियाजान

कितना पवित्र
कितना मूल्यवान
यह - सिन्दूर है अनमोल
माँग पर भरनेवाला सिन्दूर।।

बनी है सुहागिन की निशानी
माँग की सिन्दूर
बढ़ाती है सौन्दर्य नारी की
यही माँग की सिन्दूर
सौभाग्य बनती है नारी की
माँग पर सजाने पर सिन्दूर
यही माँग की सिन्दूर
बनी है सुहागिन की श्रृंगार।।

प्रेम-स्नेह से बाँधती है
दो आत्माओं को मिलाती है
वादा भी करवाती है
जीवनभर निभाने की
यही माँग की सिन्दूर
पति-पत्नि का सम्बन्ध
पति-पत्नि का अमर प्रेम।।

कितना पवित्र
कितना मूल्यवान
यह - सिन्दूर है अनमोल
माँग पर भरनेवाला सिन्दूर।।

सुश्री नयनमणि बरूआ
अनुसंधान एवं विकास विभाग
ऑ. इ. लि. दुलियाजान
प्रथम पुरस्कार – अन्य भाषा–भाषी

'बेटियों का हुनर
किसी करिश्मा से कम नहीं
शिक्षा है उनकी ढाल
इसे भेद पाना मुमकिन नहीं।'

'बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ' – योजना की शुरूआत भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 22 जनवरी 2015 को हरियाणा के पानीपत में की है।

बेटियां समाज के एक अभिन्न अंग हैं। स्त्री का रूप बेटी, बहन, माँ, बीवी अनेक प्रकार के हैं। अगर समाज में बेटियाँ नहीं रहेगी तो इन सम्बन्धों का भी मूल नहीं रहेगा। अर्थात बेटियाँ समाज के लिए भगवान का वरदान है। एक कहावत है – 'जब आप कोई मर्द को शिक्षित करते हो तो सिर्फ वह मर्द ही शिक्षित होता है, लेकिन जब आप एक औरत को शिक्षा देते हो तो एक पीढ़ी शिक्षित होता है।'

बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ योजना का आधार

100 करोड़ रुपए के शुरुआती कॉर्पस के साथ यह योजना देशभर के 100 जिलों में शुरू की गई। हरियाणा में जहाँ बाल लिगांनुपात (सीएसआर) बेहद कम है, 12 जिले चुने गए हैं।

इस योजना का लक्ष्य लड़कियों को पढ़ाई के जरिए सामाजिक और वित्तीय तौर पर आत्मनिर्भर बनाना है। सरकार के इस नजरिए से महिलाओं की कल्याण सेवाओं के प्रति जागरुकता पैदा करने और निष्पादन क्षमता में सुधार को बढ़ावा मिलेगा।

इस योजना की आवश्यकता एवं सार्थकता

2011 की ताजा जनगणना से 0 से 6 वर्ष आयु समूह में सीएसआर घटने का खुलासा हुआ है। हर 1000 लड़कों पर लड़कियों की संख्या घटकर 919 रह गई है, जब की 2001 में 927 लड़कियां थी।

अजन्मे बच्चे के लिगं का पता लगानेवाले आधुनिक उपकरणों की उपलब्धता से कन्या भ्रूण हत्या के मामले बहुत तेजी से बढ़े हैं। आर्थिक फायदों को लेकर लड़कों के प्रति सामाजिक पक्षपात होता रहा है। 'दहेज' जैसे सामाजिक कू–प्रथा के कारण माता पिता बेटियों का जन्म परिवार के लिए श्राप समझने लगे हैं। समाज में गहराई तक यह बात बैठी हुई है कि लड़कियों के साथ बड़ी जिम्मेदारी आती है। जन्म हो जाने के बाद भी लड़कियों के साथ भेदभाव नहीं थमता। स्वास्थ, पोषण और शिक्षा को लेकर उनके साथ कई तरह से पक्षपात होता है। महिलाओं के जन्म से पहले ही उनके अधिकारों का हनन शुरू हो जाता है। महिलाएं शिक्षित होगी तो उनके ऊपर किसी की भी हुकूमत नहीं चलेगी। समाज में बढ़ते अंधविश्वास का भी रोक थाम होगा। बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ अभियान इसी लक्ष्य को हासिल करने, इसके बारे में जागरूकता फैलाने और समाज में बदलाव के लिए शुरू किया गया है ?

भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने बालिका भ्रूण हत्या में बराबरी से भाग लेनेवाले चिकित्सा बिरादरी को यह याद दिलाया कि उनका ज्ञान जान बचाने के लिए है, जान लेने के लिए नहीं। बेटियों की शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए उन्होंने 'सुकन्या समृद्धि अकाउंट' की शुरूआत की। लोगों में जागरूकता लाने हेतु सरकार ने बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ थीम पर एक डाक टिकट भी जारी किया। इस योजना में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय और स्वास्थ्य मंत्रालय जैसे अन्य मंत्रालय के साथ मिलकर काम कर रहा हैं।

यह योजना तभी सार्थक होगी जब भारत का हर घर यह सोचेगा कि लड़की श्राप नहीं भगवान का वरदान है। हमारे कानून व्यवस्था में भी सुधार लाना जरूरी है। महिला को उत्पीड़न करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा देना जरूरी है। भारतीय महिला प्रतिभा का प्रतीक हैं। बस उन्हें थोड़ा आगे आने का अवसर देकर तो देखो वह इस देश को तरक्की के सातवें आसमान पर पहुँचा देगी। 'रीयो ओलंपिक' 2016 में साक्षी मल्लिक और पी.भी. सिन्धु ने भारत का नाम दुनिया के सामने गर्व से ऊँचा किया। सरकार और व्यक्तिगत संस्थानों को लड़कियों के संस्थापन हेतु ज्यादा से ज्यादा योजना का आवंटन करना चाहिए। बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ योजना की सार्थकता का नींव हमारे सोच पर टीकी हुई है। अन्त में देश के हर बेटियों के नाम –

'चिड़िया की चहक, बिटिया की महक, घर को गुलशन कर देती है!
हो लाख थकन या कोई घुटन, प्रमुदित तन–मन कर देती है!
हो चहक सदा हो महक सदा। बस इसकी शपथ उठायेंगे।
आओ, सोचे संकल्प करे, हम मिलकर इन्हें बचायेगें।'

विषय: उत्तर पूर्वी भारत का प्राकृतिक सौन्दर्य और बचाव के उपाय

संत कुमार तिवारी
उत्पादन (तेल) विभाग, ऑ इं लि, डिगबोई तेल क्षेत्र
प्रथम पुरस्कार-हिन्दी भाषी

भारत वर्ष में उत्तर पूर्वी असम, भारत वर्ष के उत्तर में स्थित है और इसे हम सात बहनों के नाम से जानते हैं जिसे Seven sisters भी कहते हैं। असम, नागालैण्ड, मेघालय, त्रिपूरा, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम तथा आइजल है और यह भगवान की दी हुई प्राकृतिक सौन्दर्य हरियाली एवं खनीज सम्पदाओं से भरा पड़ा है। यह मुख्य रुप से चाय, कोयला, कच्चातेल, जंगल की लकड़ियों एवं जीव जन्तुओं से सम्पन्न प्रदेश है।

यहाँ के जीव जन्तुओं में मुख्य रूप से गैन्डा, हाथी, बाघ, भालू और नाना प्रकार के पक्षी विद्यमान हैं।

हमारे असम का मुख्य चिह्न गैन्डा के रूप में जाना जाता है, यहाँ जब कभी हम दूसरी जगहों पर जाते हैं तो यहाँ के ऊँचे ऊँचे पहाड़ एवं प्रकृति की दी हुई हरियाली जो छटा बिखेरती है वह देखते ही मन मुग्ध हो जाता है। पूर्वी भारत की हरियाली एवं यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने हेतु बाहर के अन्य देशों से भी लोग आते हैं यहाँ की प्रमुख नदी ब्रह्मपुत्र है जो असम के मध्य भाग से हो कर गुजरती है जो की यहाँ के ब्रह्मपुत्र उपत्यका की भूमि को उपजाऊँ बना देती है।

यहाँ पहाड़ों से गिरते छोटे-छोटे झरनें सौन्दर्य को और भी बढ़ा देते हैं। यहाँ के मैदानी क्षेत्रों में तेल एवं प्राकृतिक गैस के भण्डार हैं जहाँ की भूमी में हमारे ऑयल इण्डिया एवं ओ. एन. जी. सी. दो मुख्य तेल उत्पादक संस्था है जो खनिज सम्पदा को निकालने का काम करती है।

हमारे उत्तर पूर्वी भारत में कार्जीरंगा नामक जीव जन्तुओं का उद्यान है जहाँ दूर-दूर से पर्यटक आते हैं और इसके हरियाली एवं जीव जन्तुओं को देखकर मुग्ध हो जाते हैं और दूर से आये हुए लोग एक दूसरे को यहाँ के सौन्दर्य के बारे में बताते, जो कि दूसरे लोग भी आकर यहाँ के छवि एवं छटा के सौन्दर्य का वर्णन करते हैं।

हमारे उत्तर पूर्वी भारत में एक स्थान शिलांग है जो पहले असम की राजधानी थी वहाँ पर एक स्थान चेरापूँजी है जो कि विश्व में सबसे अधिक वर्षा के लिए विख्यात है यहाँ 500 इंच वर्षा होती थी जो कि आज भी लोग शिलांग के सौन्दर्य एवं हरियाली तथा पहाड़ों की छटा को देखने जाते हैं। उत्तर पूर्वी भारत प्रकृति की दी गई इस तमाम हरियाली एवं संपदाओं से भरा पड़ा है।

हमारा कर्तव्य बनता है कि हम यहाँ के प्रकृति की दी हुई हरियाली एवं वन संपदाओं को बचाये रखें इसी में हमारी एवं प्रकृति की भलाई है, जब प्रकृति की दी हुई सम्पत्तियों को बचायेंगे तभी हमारी सुरक्षा होगी। हम पेड़ पौधों को काटते हैं पर लगाते नहीं। हम भूल जाते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि उस हरियाली एवं पर्यावरण को बचाये रखें जो हमारे जीव जन्तुओं एवं मनुष्यों को बचाने में सहायक होगी। हरियाली एवं पेड़-पौधे के बचाव से हमें आक्सीजन एवं कार्बन डाईऑक्साइड का आदान-प्रदान होता है जो कि हमारे एवं जीव-जन्तुओं तथा पक्षियों को बचाने में सहायक होती है। इसलिये हमारा और सभी का कर्तव्य बनता है कि प्रकृति की दी हुई संपदा का सही अवलोकन करें और बचाए रखें इसी में हम सभी की भलाई है।

हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार हेतु दो पंक्तियाँ :-
हिन्दी भाषा प्रेम की, मत तोड़ो चटकाय,
टूटे से यह ना टूटे, गहरी पैठ बनाय।

हमारा डिग्बोई नगर और उसकी कला संस्कृति

श्री विद्युत पवन शइकिया
उत्पादन विभाग, आँ. इ. लि.
डिग्बोई तेल क्षेत्र
प्रथम पुरस्कार - अन्य भाषा-भाषी

डिग्बोई भारत के उत्तर पूर्व में स्थित एक नगर है। डिग्बोई असम के तिनसुकिया जिले में है।

अगर कोई पूछे, डिग्बोई किस लिये मशहूर है, तो सबसे पहले उत्तर आता है कि ये भारतीय तेल उद्योग का जन्मस्थल है। 1889 में जब अंग्रेज भारत में शासन करते थे, तब पूर्व भारत का यह शहर प्राकृतिक संपदाओं का एक खजाना था। डिग्बोई के पास मार्घेरिटा में कोयले की खान थी, जहां से अंग्रेज लोग कोयला निकालते थे। यहां से निकाले हुए कोयले को कोलकाता भेजने के लिए अंग्रेजों ने दिहिंग पाटकाई के जंगलों के बीच से रेलवे लाईन का निर्माण किया था। उसी वक्त उन लोगों को जंगल के बीच खनीज तेल का भंडार

मिला। अंग्रेजों ने तेल के कुओं का निर्माण करते समय काम करने वाले लोगों को उत्साहित करते हुए बोला करते थे – "Dig boys - Dig" इसी से शहर का नाम Digboi (डिग्बोई) पड़ गया।

तेल मिलने के बाद डिग्बोई में ही एशिया की पहली रिफाइनरी की स्थापना की गयी जहाँ काम करने के लिये भारत के विभिन्न प्रान्त से आदमी डिग्बोई आते थे। अंग्रेजों ने भी एकता बनाये रखने के लिये डिग्बोई में एक नगर का निर्माण किया, देखते-देखते ही डिग्बोई में ही एक छोटा भारत बन गया जहाँ अंग्रेजों की भी खुशबू थी।

आज अगर देखा जाय डिग्बोई एक ऐसा शहर बन गया है जहाँ भारत माता की सभी संस्कृतियों का प्रभाव हैं। यहां बिहू मनाया जाता है, रामलीला भी मनायी जाती है, रासलीला भी मनायी जाती है, ईद भी बड़ी धूमधाम से मनायी जाती है, गणेश पूजा भी मनायी जाती है। दुर्गा पूजा तो डिग्बोई के घर-घर में मनयी जाती है जो कोलकाता के बाद पूरे भारत में डिग्बोई में ही देखा जा सकता है। भोलेनाथ की पूजा के समय में ऐसा लगता है कि दक्षिण भारत आके यही रुक गया हैं।

सारांश में यह कहा जा सकता है की डिग्बोई एक छोटा सा भारत है जिसको अंग्रेज ने एक ही धागे में पिरोया था, जिसकी माला में भारत के सभी संस्कृतियों के फूल गुथे हुए है। हमें गर्व है कि हम डिग्बोई के निवासी हैं और हम सब इस छोटे भारत का मान बनाये रखने के लिये हमेशा प्रयत्न करेंगे।

स्वाती कुमारी की कुछ कविताएं

– **स्वाती कुमारी**
वरिष्ठ अभियंता
कूप संलेखन विभाग

विदा के क्षण

एक पिता की कलम से जब बेटी की विदाई होती है, उस समय का एक वर्णन :-

खुशी – खुशी तुम ससुराल जाओ,
आखिर आ गए, विदा के क्षण।
तुम्हारे प्रेम की डोर से बँधी हुई है,
हम सबों का तन-मन।
तुम दूर तो जा रही हो, पर
पास होंगे यादों के कुछ क्षण।।

दिल तो टूटा जा रहा है, पर,
समेटें हैं हम आज अपनापन।
आज इस सुमधुर बेला में,
झूम रहा सारा धरती और गगन।।

इस पुरानी बगिया को छोड़कर,
तुम जा रही हो एक नया उपवन।
सदा सुखी तुम वहाँ रहना,
अनमना करना न अपना मन।।

विधि का विधान है यह,
और सृष्टि का यही है नियम,
हम चाहें या ना चाहें,
होना ही था यह परिवर्तन।।

अपनी प्रेम भाव की सेवा से,
जीतना है तुझे सबों का मन।
ससुराल में तुझे अनंत प्यार मिले,
कभी विचलित न हो तुम्हारा मन।।

अटल रहे तुम दोनों की जोड़ी,
यही कहना है मेरा मन।
प्रगति के पथ पर बढ़ते रहो,
और करो दोनों कुल को रोशन।।

खुशी – खुशी तुम ससुराल जाओ,
आखिर आ गए, विदा के क्षण।।

बेटा और बेटी

बेटा तन है, बेटी मन है।
बेटा वंश है, बेटी अंश है।
बेटा आन है, बेटी शान है।
बेटा मान है, बेटी गुमान है।
बेटा वारिस है, बेटी पारस है।
बेटा संस्कार है, बेटी संस्कृति है।
बेटा भाग्य है, बेटी विधाता है।
बेटा दवा है, बेटी दुआ है।
बेटा शब्द है, बेटी अर्थ है।
बेटा राग है, बेटी बाग है।
बेटा गीत है, बेटी संगीत है।
बेटा प्रेम है, बेटी पूजा है।

'हिन्दी' से 'हिंदुस्तानी' तक

(भारत के मूलतत्व का पुनः आविष्कार)

डॉ. रंजन के. भगवती
वरिष्ठ अनुसंधान वैज्ञानिक
आर एंड डी विभाग, दुलियाजान
ऑयल आईडी : 201426

भारत की आम जनता के लिए एक ही भाषा का सपना या फिर एक ऐसी संपर्क भाषा जो हमारे महान देश के प्रत्येक कोनों को आपस में जोड़ती हो, जबकि उसी समय सदियों पुरानी भारतीय सभ्यता और भारतीय मूल तत्व की सुगबुगाहट ने हिंदी को देश में राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। हालांकि, भारत सदियों पुराने अंग्रेजी शासन से आजादी के बाद के अस्थिर दौर का यह प्रयास दक्षिण भारत के पुरजोर विरोध के साथ ही फलीभूत हो रहा था जहां के लोगों के आपसी संवाद के लिए उनकी अपनी पसंदीदा मातृभाषाओं के रूप में द्रविड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम अपनी सशक्त पकड़ बनाये हुए थी।

कोई भी आधुनिक भाषा जो सक्रिय व जीवंत तो है ही साथ ही देश की आबादी के अधिकांश लोगों द्वारा बृहद स्तर पर अपनायी जाती हो, उसे भी समय के साथ-साथ विकसित होने के लिए बाध्य होना पड़ता है। दूरसंचार व सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने अब यह संभव कर दिया है कि हिन्दी भी हमारे दैनिक जीवन को अनेकों प्रकार से स्पर्श कर सकती है साथ ही हिन्दी अपनी शब्दावली को समृद्ध कर अपने विकास को एक नई दिशा प्रदान कर सकती है। इसमें नए जोड़े गए शब्द वैश्विक भाषाओं यथा अंग्रेजी, फ्रेंच आदि व भारत की क्षेत्रीय भाषाओं से भी हो सकते हैं। इस प्रकार का ज्यादातर विकास संभव है कि, इसके अच्छे के लिए हो रहा हो परंतु हिन्दी के शुद्धतावादी दृष्टिकोण रखने वाले विद्वान अन्यथा तर्क देते हैं।

हालांकि, मैं हिन्दी के एक अन्य रोचक पहलू पर ध्यान केंद्रित करना चाहूंगा जो व्यापक रूप से उजागर नहीं हो पाया है या यूं कहे कि भाषा के तथाकथित 'मार्गदर्शकों' द्वारा इसे ज्यादा महत्व नहीं दिया गया है। हिन्दी की इस महत्वपूर्ण व अकसर अनदेखी की जाने वाली विशेषता का महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि तथाकथित 'शुद्ध' हिंदी या हिंदी भाषा, जो भारत के स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती है, वह शायद ही कभी इसी रूप में बोली भी जाती है। यह सभी राज्यों के लिए सच है, उन राज्यों के लिए भी जिन्हें हिन्दी बोलने वाले राज्यों की श्रेणी में रखा जाता है। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर के द्वारा अनौपचारिक बातचीत के क्रम में उन्होंने ही यह तथ्य मेरे समक्ष रखा और उन्होंने तर्क देते हुए आगे कहा कि शुद्ध भोजपुरी या फिर पंजाबी, राजस्थानी, हरियाणवी, मैथिली आदि हिन्दी में जितनी भिन्न है हिन्दी से ऊतनी ही भिन्न है शुद्ध असमिया भी। उनके द्वारा कहा गया हर एक शब्द मुझे अपने में नवीन व क्रांतिकारी विचारों का वाहक लगा और जिसने मुझे हिन्दी के साथ-साथ अपनी मातृभाषा असमिया के उद्भव और विकास के बारे में गहन खोज करने के लिए प्रेरित किया। इस क्रम में मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं अपने ही तरीके से एक बार फिर से भारत की खोज कर रहा हूं। जब मैंने अपने स्नाकोत्तर की डिग्री के लिए अलीगढ़ विश्वविद्यालय में दाखिला लिया तो वहां की विचारधारा को भी देखा, सुना और समझा भी फिर एक दिन जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के कैंपस में स्थित गंगा ढाबा पर चाय पर चर्चा के दौरान ही यह चिंगारी मेरे भीतर कहीं जल उठी। अलीगढ़ विश्वविद्यालय के मेरे एक सहयोगी जोकि बिहार के किशनगंज क्षेत्र के रहनेवाले थे उन्होंने मुझे बताया कि उनके गृहनगर 'सूर्यपुरी' के आसपास बोली जाने वाली भाषा या हिन्दी की बोली और असमिया भाषा में बहुत ही अधिक समानता है। यह जानकारी मेरे लिए बहुत ही रहस्योद्घाटक थी क्योंकि उम्र के इस पड़ाव तक आज तक किसी ने भी कभी भी मुझे मेरी मातृभाषा असमिया और हिन्दी के स्वरूपों की समानता के बारे में नहीं बताया था। मैं उस समय माइक्रो बायोलाजी में स्नातकोत्तर कर रहा था और तत्कालीन विषयगत व्यस्तताओं ने मुझे मेरी इस खोज को जारी रखने की अनुमति प्रदान नहीं की हालांकि उस समय से ही मैं अपने देश की महान सांस्कृतिक व भाषाई विरासत और महान भारतीय सभ्यता के प्रति आकर्षित हुआ, जो किसी न किसी प्रकार से देश को आपस में जोड़े रखती है।

जब मैंने 'ऑयल किरण' के लिए एक लेख लिखने का निश्चय किया तब मैंने यह भी निश्चय किया कि हिन्दी से संबंधित वर्षों से संचित सभी अनौपचारिक जानकारियों की वैधता वर्ल्ड वाइड वेब के माध्यम से जांची जाए। मेरे आश्चर्यचकित होने का कारण सिर्फ उपरोक्त अनुच्छेदों में वर्णित जानकारियों के सही पाये जाने के कारण ही नहीं था वरन् मैंने बोलियों के संबंध में जो कुछ भी नया खोजा उसने मुझे और भी ज्यादा मंत्रमुग्ध कर दिया। मीडिया और हिन्दी फिल्मों में बृहद पैमाने पर प्रयोग की जाने वाली हिन्दी 'हिन्दुस्तानी' के रूप में जानी जाती है, ऐतिहासिक रूप से हिन्दुस्तानी, हिंदवी, देहलवी और रेखता के रूप में भी जानी जाती है जोकि उत्तरी भारत और पाकिस्तान की लोकभाषा है। मुख्यतया दिल्ली की खड़ी बोली उपभाषा से निकली इस प्लुरिसेंट्रिक (pluricentic) भाषा में बहुतायत रूप में संस्कृत, अरबी और फारसी के शब्द शामिल किये गये और इसके दो सरकारी रूपों आधुनिक मानक हिन्दी व आधुनिक मानक उर्दू को मान्यता प्राप्त है। मानक हिन्दुस्तानी भाषा के बोले जाने वाले दो रूप प्रचलित है पहला हिन्दी और दूसरा उर्दू ये दोनों ही रूप व्याकरणिक स्तर पर लगभग समान है परंतु ये साहित्यिक संवादों, शैक्षणिक तथा तकनीकी शब्दावली के स्तर पर आपस में भिन्न है जहां उर्दू, फारसी, तुर्की व अरबी से बेहद प्रभावित रहती है वहीं हिन्दी का झुकाव संस्कृत की तरफ ज्यादा रहता है।

भारत के विभाजन से पहले, हिंदुस्तानी, उर्दू और हिंदी जैसी अभिव्यक्तियां समानार्थक थी, और इसमें जिसे हम आज अलग-अलग हिन्दी और उर्दू कहते हैं वे सब समाहित थी। 1947 में भारत की आजादी के बाद, मौलिक अधिकारों पर बनी उप-समिति ने सिफारिश की थी कि भारत की आधिकारिक भाषा हिंदुस्तानी हो। हालांकि, इस सिफारिश को संविधान सभा द्वारा नहीं अपनाया गया। हिंदुस्तानी के ही एक मानकीकृत रूप हिन्दी को भारतीय संविधान द्वारा 'भारत की राजभाषा' घोषित किया गया। इसी हिन्दुस्तानी का दूसरा मानकीकृत रूप उर्दू पाकिस्तान की राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। भारत के विभिन्न राज्यों यथा जम्मू और कश्मीर, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, तेलंगाना और पं. बंगाल की यह राज्य भाषा भी है।

हमारे ऐतिहासिक दबाव जो भी रहे हों, उससे इतर हमारी सामूहिक संरचना, सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत जिस प्रकार से आम जन की भाषा से जुड़ी हुई है उसे देखते हुए हिन्दुस्तानी (हिन्दी और उर्दू के मिश्रित स्वरूप) को ही अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाना ज्यादा समझदारी होती। हालांकि, इस परिस्थिति में यह एहसास करना भी महत्वपूर्ण है कि आजादी के समय हिन्दुस्तानी की बजाय हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने के लिए उन अग्रणी लोगों के ऊपर कैसा दबाब रहा होगा। हाल के दिनों में भारत के महत्वपूर्ण शहरों के नाम जैसे कि 'बॉम्बे' बदलकर बन गया 'मुंबई', 'मद्रास' बना 'चेन्नई', परिवर्तन के दौरान उत्पन्न हुए प्रभावकारी दबाव के परिप्रेक्ष्य में महसूस कर सकते हैं। परंतु प्रश्न यह है कि क्या हम इसमें अपने सामूहिक इतिहास के तत्वों को मिटा सकेंगे अथवा यह भारतीय राष्ट्रवाद को पुनः परिभाषित करने का प्रयास है? क्या हम अभी भी आगरा के 'ताजमहल' पर गर्व नहीं करते हैं, क्या हम मुंबई के 'गेटवे ऑफ इंडिया' के लिए भी वैसा ही महसूस नहीं करते? वैश्विक परिदृश्य में भी नव-कट्टरपंथी समूह उभरकर सामने आए हैं, जिन्होंने यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त विश्व धरोहर स्थलों का अफगानिस्तान, इराक और सीरिया में विनाश किया है।

उत्तरी भारत में बोली जाने वाली भाषा को परिभाषित करने के लिए आज भी 'हिंदुस्तानी' शब्द का प्रयोग किया जाता है और यही बॉलीवुड की फिल्मों में भी बोली और सुनी जाती है। इसे भारतीय उप महाद्वीप के बाहर बोली जानेवाली विभिन्न प्रकार की हिंदी जैसे कि फिजी हिन्दी, कैरेबियन और दक्षिण अफ्रीका की हिन्दुस्तानी के लिए भी प्रयोग किया जाता है। हिन्दी के नैतिकवादी दृष्टिकोण के विद्वानों को निराश करते हुए हमारे स्कूलों और कालेजों में पढ़ायी जाने वाली हिन्दी के स्वरूप में परिवर्तन एवं परिवर्तित स्वरूप का प्रचलन संपूर्ण भारत में बहुत ही तेजी से हो रहा है। हिन्दी समाचार चैनलों जिससे सरकार द्वारा संचालित दूरदर्शन और लोकप्रिय टीवी कार्यक्रमों में जो हिन्दी बोली जा रही है उसमें संस्कृतनिष्ठ शब्दों की जगह उर्दू के शब्दों को ज्यादा तरजीह दी जा रही है। यह एक अनिवार्य परिवर्तन है जिसे सोशल मिडिया के बढ़ते प्रचलन ने और भी तेजी से बढ़ाया है।

इसलिए अगली बार, जब कोई आप से 'शुद्ध हिंदी' में बात करने के लिए बोले तो आप एक मुस्कान के साथ उससे कहें आप उनसे असमिया-हिन्दी / मराठी-हिन्दी / मलयाली-हिन्दी आदि में बात करेंगें और आप उस समय उतना ही गर्व कर सकते हैं जितना कि उसे अपनी भोजपुरी-हिंदी, पंजाबी-हिन्दी, मारवाड़ी हिन्दी या फिर इसी संदर्भ में एक अमेरिकन को अपनी अमेरिकन-अंग्रेजी, एक अफ्रिकन को अपनी अफ्रिकन-अंग्रेजी बोलने में महसूस होता है। आम जन की भाषा संगीत के समान होती है जो समय के साथ-साथ अपने आप को भी विकसित करती रहती है। वास्तव में भाषा एक सार्वभौमिक अपील है जो जाति, पंथ, धर्म और मानव निर्मित सीमाओं को पार कर सकती है। सब को अपने आप में समाविष्ट करके बोली जाने वाली हिन्दुस्तानी भाषा सदैव ही इस महान राष्ट्र का मूल तत्व थी, है और रहेगी।

जय हिन्द!!!

हिंदी राजभाषा राष्ट्रभाषा या विश्वभाषा

अरूण कुमार जैन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा 1917 में भरुच (गुजरात) में सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता प्रदान की गई थी।

तत्पश्चात 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने का निर्णय लिया तथा 1950 में संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के द्वारा हिन्दी को देवनागरी लिपि में राजभाषा का दर्जा दिया गया।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर 1953 से 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से लेकर अनुच्छेद 351 तक राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान किए गए। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग का गठन किया गया।

राष्ट्रपति के आदेश द्वारा 1960 में आयोग की स्थापना के बाद 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित हुआ, तत्पश्चात 1986 में राजभाषा संबंधी प्रस्ताव पारित किया गया।

राजभाषा अधिनियम की धारा 4 के तहत राजभाषा संसदीय समिति 1976 में गठित की गई। राजभाषा नियम 1976 में लागू किए गए तथा राजभाषा संसदीय समिति की अनुशंसा पर राष्ट्रपति द्वारा राजभाषा नीति बनाई जाकर लागू की गई।

राजभाषा अधिनियम 1963 द्वारा राजभाषा के शासकीय कार्यों, नियमन हेतु प्रावधान किए गए। तीन भाषायी क्षेत्र बनाए गए जिसके तहत क क्षेत्र में – उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, हरियाणा, हिमाचल, उत्तरांचल, झारखंड, राजस्थान, दिल्ली एवं अंडमान द्वीप समूह। ख क्षेत्र में – गुजरात, महाराष्ट्र तथा ग क्षेत्र में उपरोक्त के अतिरिक्त सभी राज्य एवं संघ क्षेत्र रखे गए।

यह सुनिश्चित किया गया कि राजभाषा में प्राप्त पत्रों के जवाब शत-प्रतिशत राजभाषा में दिए जाएं। अन्य भाषा में प्राप्त पत्रों के जवाब क्षेत्र क में हिन्दी तथा अंग्रेजी में, ख में 60 प्रतिशत हिन्दी-अंग्रेजी व शेष अंग्रेजी में तथा ग में 40 प्रतिशत हिन्दी-अंग्रेजी तथा शेष अंग्रेजी में दिए जा सकते हैं। यह आंकड़ा धीरे-धीरे हिन्दी-अंग्रेजी की ओर बढ़ाया जाए तथा क भाषी क्षेत्रों में पूर्णत: राजभाषा हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।

राजभाषा विभाग प्रत्येक वर्ष वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है, साथ ही राजभाषा नियम 1976 के तहत बनाए गए नियमों के अधीन मासिक, त्रैमासिक एवं अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट के माध्यम से सतत निगरानी एवं विश्लेषण का कार्य करता है तथा अपनी समेकित रिपोर्ट संसदीय राजभाषा समिति जिसमें कि 30 सदस्य (क्रमश: 10 राज्यसभा और 20 लोकसभा से) होते हैं; के समक्ष प्रस्तुत करता है, जो कि समय-समय पर विभिन्न विभागों का दौरा कर वस्तुस्थिति का अध्ययन करती है तथा अपनी निरीक्षण रिपोर्ट सीधे राष्ट्रपति को प्रस्तुत करती है।

प्रत्येक कार्यालय में राजभाषा संबंधी एक त्रैमासिक बैठक का प्रावधान पिछली तिमाही में किए गए कार्यों, पत्राचार, तिमाही में आयोजित कार्यशाला एवं राजभाषा के प्रशिक्षण संबंधी उपलब्धता एवं परिमार्जन हेतु सुझाव आमंत्रित किए जाने हेतु किया गया। राजकीय विभागों में राजभाषा के प्रयोग हेतु सर्वाधिक प्रभावी प्रक्रिया पत्राचार है, क्योंकि उसी के आधार पर मिसिल अथवा फाइलों में टीप्पणी लिखी जाती है।

अत: जब भी त्रैमासिक बैठकों में विचार-विमर्श होता है, तब सबसे ज्यादा सूक्ष्म विश्लेषण त्रैमासिक पत्राचार पर होता है, आकड़ों की निगरानी भी होती है, कठिनाइयां सामने आती हैं और सुधार हेतु उपाय भी खोजे जाते हैं ताकि राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग पत्राचार में बढ़ाया जा सके। विभाग प्रमुख की अध्यक्षता में होने वाली इन बैठकों में विभाग के विभिन्न अनुभागों के जिम्मेदार अधिकारियों के बीच एक स्वस्थ प्रतियोगिता भी पनपती है कि वह और अधिक बेहतर परिणाम दैनंदिनी पत्रों में राजभाषा के प्रयोग द्वारा दे तथा उसके प्रयास सभी के बीच सराहे जा सकें।

यह हमारी विडंबना रही है कि देश में राजभाषा के रूप में हिन्दी को संविधान लागू होने के पूर्व कभी भी आधिकारिक मान्यता नहीं मिली थी।

मुगलों के समय राजभाषा के रूप में अरबी--फारसी का बोलबाला था, तो अंग्रेजों ने अंग्रेजी और उर्दू को राजकाज चलाने में इस्तेमाल किया। दरअसल, हिन्दुस्तान में खड़ी बोली और हिन्दी जनभाषा के रूप में मान्य रही और पुष्ट होती चली गई।

आज भी सरकार ने राष्ट्रभाषा के रूप में राजभाषा को स्वीकार नहीं किया है, मगर जनता ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप में अंगीकार कर लिया है। इसकी व्यापक स्वीकृति शीघ्र इसे विश्वभाषा का दर्जा प्रदान

करवा देगी। इसके पीछे देवनागरी का सांस्कृतिक होना भी है। संस्कृत संगणक (कम्प्यूटर) पर सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रूप में मान्य की गई है, मगर संस्कृत का प्रचार-प्रसार अत्यल्प होने के कारण उसकी निकटतम भाषा के रूप में तथा व्यापकता की दृष्टि से हमारी राजभाषा हिन्दी को फायदा मिलना सुनिश्चित है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज भौतिकतावादी हुआ है, उसकी सोच अर्थवादी हो गई है, विश्व बाजारवाद पर चल पड़ा है, तब हमारा देश वैश्विक संस्कृति से अलग नहीं रह पा रहा है।

हमने राजभाषा को पूर्णता होते हुए भी बाजारीय अर्थवादी सोच नहीं दी। यही कारण है कि हमारा लेखक याचक है और प्रकाशक दाता।

हिन्दी की किताब छापना और बेचना घाटे का सौदा है, जबकि अंग्रेजी में किताब छापना मुनाफे का धंधा है। अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, हिन्दी की किताबों से ज्यादा प्रसिद्धि और पैसा बटोर रहा है।

मौजूदा समय में विश्व स्तर पर अंग्रेजी के सबसे अच्छे लेखक मूलत: भारतीय हैं। गीता जैसी सूक्ष्म प्रबंधकीय किताब होने के बावजूद हम राष्ट्रभाषा के प्रबंधन में कहीं न कहीं चूक गए हैं और यही चूक राजकीय स्तर पर भी हुई।

हमारे नीति-निर्माताओं ने व्यापक सोच के स्थान पर भाषायी संकीर्णता और क्षेत्रीयता को तरजीह दी, फलत: 22 भाषाओं को राज्यों की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई। हम एक भाषा को राष्ट्रभाषा नहीं बना सके और यही कारण है कि हमें आज राजकीय त्रैमासिक पत्रों के विश्लेषण के माध्यम से अधिकारी-कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के विकास में योगदान पर चर्चा करनी पड़ती है।

यह हिन्दी की जीत है कि जिन क्षेत्रों से हिन्दी का विरोध हुआ उन्हीं क्षेत्रों के नाम पर *चेन्नई एक्सप्रेस* जैसी हिन्दी फिल्में 3 दिन में 100 करोड़ और 300 करोड़ का आंकड़ा पार कर वैश्विक फिल्म का दर्जा पा रही है।

शासकीय कर्मचारी-अधिकारी देश के एक भाग से दूसरे भाग में आ-जा रहे हैं। स्थानांतरण के कारण तो वे राजभाषा के ध्वजवाहक बने हुए हैं। वैश्वीकरण का लाभ निश्चित रूप से हिन्दी को देश में पुष्टता प्राप्त करने में हुआ है।

इंटरनेट ने देशों की दूरियां कम की हैं तब अधिकारियों-कर्मचारियों को भाषा की महत्ता समझ में आ रही है। वे यह जान गए हैं कि वैश्विक स्तर की तरक्की के लिये अंग्रेजी जरुरी नहीं है।

हमारे देश में विदेशी प्रतिनिधिमंडल आते हैं तो सरकारी दुभाषिए से काम चलाते है, क्योंकि इंग्लैंड-अमेरिका के लोगों को छोड़ दें तो ज्यादातर लोग अंग्रेजी नहीं जानते।

शासकीय स्तर पर खासकर तकनीकी, न्यायालयीन, कर राजस्व आदि क्षेत्रों में मान्य मानक शब्दावली की हिन्दी में अनुपलब्धता ने राजभाषा के प्रयोग में बड़ी बाधा खड़ी की हुई है जिसका निराकरण भाषाविदों से अपेक्षित था। विभिन्न राजकीय अधिकारियों-कर्मचारियों ने इसका निदान व्यावहारिक तौर पर पत्राचार के माध्यम से अपने-अपने क्षेत्रों में नए प्रयोग से तकनीकी हिन्दी शब्दों का विकास किया है। तकनीकी शब्दावली आयोग भी प्रयासरत है यद्यपि एकरूपता का अभाव बना हुआ है।

यह एक शुभ शगुन है कि शासकीय अधिकारियों और कर्मचारियों में राष्ट्रीयता की भावना, एक राष्ट्र-एक भाषा की आवश्यकता और राष्ट्रीय एकता की सोच स्पष्ट है। वह सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति भी सचेत है और अपनी सीमाओं में रहकर राजनेताओं के मंसूबे अच्छी तरह पहचानता है अत: राजभाषा के उन्नयन में समर्थ और सार्थक योगदान दे रहा है।

अभाव से उत्साह कम नहीं होता,
हो भाव तो नियम में दम नहीं
होता, हैं समर्थ हम और सार्थक भी हम,
नियम भी हम हैं और
नियामक भी हम, एक नहीं थे,
कमजोर नहीं,
कभी रण से भागे न हम,
उन्नति के उन्नायक भी हम, रहे
विश्व के नायक भी हम, हिन्दी
विश्वभाषा बने, हैं इस लायक भी हम।

साभार: प्रात: खबर

राजभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ।
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पढ़ो, लिखो कोउ लाख विध, भाषा बहुत प्रकार।
पै जबहीं कुछ सोचिहो निज भाषा अनुसार।।
- भारतेंदु हरिश्चंद्र

हिन्दी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति।
- रामवृक्ष बेनीपुरी

अजनबी

– **सुनीता मलकानी,** पत्नी – श्री अनील मलकानी

अजनबी तुम क्यू जानी पहचानी सी लगती हो
ख्वाहिशों की शाखों पे शबनबी तराने सी लगती हो
दूर से निहारती वो नजर तुम्हारी
बारिशों के पानी सी लगती हो
बिखरे से गेसुओं को बाँध कर
शंकर की उमा सी सजती हो
पैरो में बाँधे पायल की लड़ी
मोहन की राधा सी चलती हो
आस लिये बैठा मन एकाकी सा
दीप जलाये तुम धरा सी लगती हो
सुन ना पाता मन वाणी को जैसे
मौन व्यथा सी तुम कंठ पर सजती हो
नभ तल में खिल रहा सौन्दर्य तुम्हारा
गगन मृदु भरा स्पर्श पुलकित सा लगती हो
वीणा की तान लिये हृदय में मेरे
धारा के मझदार में मांझी सी लगती हो
खोलो कभी मन के द्वारा तो निहारो
अजनबी तुम नहीं थी कभी कहीं
तुम तो मेरी शब्दावली की रचना सी लगती हो।

मेरी अभिलाषा

– **पुलक ज्योति शर्मा**
उप–महाप्रबंधक (पी एल एफ एंड पी)
ओ जी पी एल एंड पी विभाग

उन्नति की लम्बी सीढ़ी चढ़ना मेरा भी लक्ष्य है
पंख फैलाकर गगन छुना मेरी भी आशा है
परिधि पार कर महाकाश में तैरना मेरी भी अभिलाषा है

यह भी अभिलाषा है मेरी
लौटकर कदम रखो जब धरती पर
प्यास बुझाने के लिये पाऊँ बूंद–बूंद निर्मल जल
हरा भरा सुफला खेत से घर लाऊँ निर्मल अनाज
साँस भरने के लिये पाऊँ निर्मल हवा
जिस हवा में न हो कार्बन न सल्फर
हो सिर्फ ऑक्सीजन और ऑक्सीजन।

पानी न होता

– **आदित्य नारायण शर्मा**
कक्षा – XI (B)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

पानी न होता यदि धरा पर,
बोलो हम फिर क्या पीते ?
और बिना पानी के भैया,
पल–भर भी कैसे जीते ?

क्या बिन पानी पौधे उगते,
फसले लगती हरी–भरी ?
खिलते फूल क्या रंग–बिरंगे,
क्या फलों की लगती झड़ी ?

कैसे बिजली बादल बनते,
कैसे फिर वर्षा होती ?
कैसे नदियाँ निर्झर बहते,
सागर देता क्यों मोती ?

ओस न गिरती, धुंध न होती,
देख न इन्द्रधनुष पाते।
कुएँ – ताल और बावड़ियाँ,
बिलकुल सूख सभी जाते।

बर्फ न होती, दूध न होता,
बनती लस्सी फिर कैसे ?
घर के बर्तन, फिल्टर, कूलर,
लगते खाली सब जैसे।

बिन पानी जग सूना लगता,
नीरस हो जाता जीवन।
अत: बचाएँ हम पानी को
पानी ही है सच्चा धन।

माँ झूठ बोलती है ...

– **कमलेश कुमार अग्रवाल**
उप–महाप्रबंधक
ऑयल एवं गैस उत्पादन सेवाएँ

सुबह जल्दी उठाने सात बजे को आठ कहती
नहा लो, नहा लो, के घर में नारे बुलंद करती है,
मेरी खराब तबियत का दोष बुरी नज़र पर मढ़ती
छोटी परेशानियों का बड़ा बवंडर करती है
.... माँ बड़ा झूठ बोलती है

थाल भर खिलाकर तेरी भूख मर गयी कहती है
जो मैं न रहूं घर पे तो मेरे पसंद की
कोई चीज़ रसोई में उनसे नहीं पकती है,
मेरे मोटापे को भी कमजोरी की सूज़न बोलती है
.... माँ बड़ा झूठ बोलती है

दो ही रोटी रखी है रास्ते के लिए बोल कर
एक मेरे नाम दस लोगों का खाना भरती है,
कुछ नहीं – कुछ नहीं, बोल नजर बचा बैग में
छिपी शीशी अचार की बाद में निकलती है
.... माँ बड़ा झूठ बोलती है

टोका टाकी से जो मैं झुंझला जाऊं कभी तो,
समझदार हो अब न कुछ बोलूंगी मैं,
ऐसा अक्सर बोलकर वो रुठती है
अगले ही पल फिर चिंता में हिदायती होती है
.... माँ बड़ा झूठ बोलती है

तीन घंटे मैं थियटर में ना बैठ पाउंगी,
सारी फिल्मे तो टी वी पे आ जाती है,
बाहर का तेल मसाला तबियत खराब करता है
बहानों से अपने पर होने वाले खर्च टालती है
.... माँ बड़ा झूठ बोलती है

मेरी उपलब्धियों को बढ़ा चढ़ा कर बताती
सारी खामियों को सब से छिपा लेती है
उनके ब्रत, नारियल, धागे, फेरे मेरे नाम
तारीफ़ जमाने में कर बहुत शर्मिंदा करती है
.... माँ बड़ा झूठ बोलती है

भूल भी जाऊं दुनिया भर के कामों में उलझ
उनकी दुनिया में वो मुझे कब भूलती है ?
मुझ सा सुंदर उन्हें दुनिया में ना कोई दिखे
मेरी चिंता में अपने सुख भी नहीं भोगती है
.... माँ बड़ा झूठ बोलती है

मन सागर मेरा हो जाए खाली ऐसी वो गागर
जब पूछो अपनी तबियत हरी बोलती है,
उनके 'जाये' है, हम भी रग रग जानते है
दुनियादारी में नासमझ वो भला कहाँ समझती है
.... माँ बड़ा झूठ बोलती है

उनकी फैलाए सामानों से जो एक उठा लू
खुश होती जैसे उन पे उपकार समझती है,
मेरी छोटी सी नाकामयाबी पे गहरी उदासी
सोच सोच अपनी तबियत का नुकसान सहती है
.... माँ बड़ा झूठ बोलती है

जीवन का महत्व

– **संजीत ठाकुर,** कक्षा – ग्यारह (विज्ञान)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दुलियाजान

तू जिन्दगी को जी,
उसे समझने की कोशिश न कर।
सुन्दर सपनों के ताने बाने बुन,
उसमें उलझने की कोशिश न कर।
चलते वक्त के साथ तू भी चल,
उसमें सिमटने की कोशिश न कर।
अपने हाथों को फैला, खुल कर साँस ले,
अन्दर ही अन्दर घुटने की कोशिश न कर।
मन में चल रहे युद्ध को विराम दे,
खामख्वाह खुद से लड़ने की कोशिश न कर।
कुछ बात भगवान पर छोड़ दे,
सब कुछ खुद सुलझाने की कोशिश न कर।
जो मिल गया उसी में खुश रह,
जो सकून छीन ले उसे पाने की कोशिश न कर।
रास्ते की सुन्दरता का लुप्त उठा,
मंजिल पर जल्द पहुचने की कोशिश न कर।

हिंदी व मातृभाषा उतनी ही जरूरी जितनी धनोपार्जन की भाषा

मदन सिंघल, सिलचर,

14 सितंबर से 30 सितंबर तक सरकारी, गैर-सरकारी, केन्द्रीय विभाग व हिंदी प्रेमी हिंदी दिवस मनाते हैं। 15 अगस्त से 14 सितंबर तक एक संस्था हिंदी माह मना रही है। सभी बधाई के पात्र हैं जो हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में योगदान दे रहे हैं। हिंदी को पहले टेलीविजन ने भारत में स्थान दिलाया अब तो हमारे प्रधानमंत्री जी पूरे विश्व में हिंदी भाषा में बड़े ही जोश व आकर्षक अंदाज में धारावाहिक हिंदी में भाषण दे रहे हैं। अप्रवासी भारतीय तथा विदेशी लोग झूम उठते हैं। यही हमारी हिंदी का गौरव है जो पूरे संसार में डंका बज रहा है।

मातृभाषा के अपने महत्व है उससे अपनत्व, ममता व प्यार आता है जिससे बच्चे अपने मां-बाप, दादा-दीदी, नाना-नानी के साथ बुवा-मौसी, चाचा-चाची, मामा-मामी आदि रिश्तों को समझते हैं तथा सामाजिक तथा परिवारिक परिवेश से जुड़े रहते हैं। अपनी भाषा, रहन-सहन, पूजा-पाठ व संस्कृति का ज्ञान कमोबेश बच्चों में जरुर होना चाहिए। मातृभाषा के अहम के कारण सभी जानते हैं। देश में अंग्रेजी भाषा का बोलबाला देश की आजादी से पहले बहुत ही कम था लेकिन आजादी के बाद धीरे-धीरे स्थानीय भाषा व हिंदी भाषा में चलने वाले विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय अंग्रेजी में तब्दील हो गये। इसका दोष अंग्रेजों को नहीं दिया जा सकता। अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व व अमरीकी डालर का महत्व आज भी खत्म नहीं हुआ।

क्या हमारे देश के शीर्ष राजनेता लिखित भाषण भी नहीं पढ़ सकते हिंदी में। मोदी सरकार के सारे मंत्री लगभग हिंदी में ही भाषण देते हैं। संसद में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के सांसद गर्व के साथ हिंदी में प्रश्न करते हैं उनका प्रयास प्रशंसनीय है। तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिंह राव कई भाषाओं के विद्वान थे। आज भी देश में हिंदी, अंग्रेजी, मातृभाषा व स्थानीय भाषा के अलावा अन्य भाषाओं के विद्वान है।

भाषा जितनी भी सिखी जाए उतनी ही उपयोगी है। अंग्रेजी भाषा का उपयोग सभी लोग अपने व्यवसाय में करते हैं लेकिन हमें अपनी मातृभाषा को भुलना नहीं चाहिए तथा सारे देश में आना-जाना है तो राष्ट्रभाषा हिंदी का जानना जरुरी है। अब विदेशों में भी भारत से आनेवालों के साथ वहां के लोग हिंदी में बोलने का प्रयास करते है।

आजादी से पहले जो हमने खोया उस समय मजबूरी थी लेकिन आज हम आजाद हैं तो हमें अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी को सिखना चाहिए तथा मातृभाषा को भूलना नहीं चाहिए। 365 दिन कोई न कोई दिवस हम मनाते हैं चाहे वह भारतीय हो अथवा विश्व के अन्य देश का। इसी तरह 14 सितंबर को हिंदी दिवस मना कर अपने दायित्व से मुक्त हो जाते हैं तो यह सालाना पर्व बन जाता है। हिंदी दिवस गांव-गांव में मने उसमें सांस्कृतिक, कार्यक्रम, प्रश्नोत्तरी, विभिन्न प्रतियोगिता, हिंदी सेवियों को सम्मान, बौद्धिक, चर्चा, कवि सम्मेलन व अन्य कार्यक्रम होने चाहिए। सरकारी विभागों द्वारा अनिवार्य समझकर लिपापोती करने का प्रयास नहीं होना चाहिए।

भारत माता के मस्तक पर, रक्तवर्ण-सी बिंदी है
कल-कल, छल-छल बहती नदियां, सबकी वाणी हिंदी हैं।

साभार: दैनिक पूर्वोदय

साँच

- मो. आलम
कक्षा - XI
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

साँच बोली कोई न ते साँच आई बुलाए।
एकै झूठ ते बोली सौ झूठ बोलाए।।
जग जाने त्यो केसा तेसा ही कहलाए।
आवत दिन कोई न जानत त्यो मन घबराए।।
गुरू कहत हे साँच बोल जग सब भुलाए।
म्यों मन जानत क्या कहे जग सब मुरझाए।।

झूठ न छपत सब जाने जग चाहत साँच कहावत।
केउ न चाहत साँच बोल अन्य मुँह मनावत।।
साँच बोलत न जावे कुछ आत जो मुशीबत।
आपे कुछ न चाहि एकै चाहि हकीकत।।
साँच बोलत कष्ट करत आत दिन समाना।
झूठ बोलत करत न कुछो त्यो दिन होई शरमाना।।

परवत छूवत वही जो साँच बोलत सदा।
साँच से पीछे न हटियो तेही है जीवन अदा।।
साँच के कोउ न वध कर ते रहे विशाल।
साँच न छूपत त्यों आत उभर जीवन में सवाल।।
एकै साथी साँच के त्यो रहत इमान।
जे न करत सत भला ते न कहलात इनसान।।

आदतें छोड़नी होगी अब

- **शोभा सोनार**
कक्षा - ग्यारहवीं (A)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दुलियाजान

सिर से लेकर पैर तक
पसीना टपकाकर,
हजारों माइल तक फैले आकाश में,
एक टुकड़ा भी,
न मिलने पर
ज्यादा-ज्यादा 'सन्तोषजनक' विटामिन पिल्स खाकर
भूख टालने वाली आदतें छोड़नी होगी अब।

कबूतर उड़ाकर शान्ति ढूढ़ने वालों में
शान्ति ढुढ़ने न जाओ,
अशांन्ति के प्रलय तले दब जाओगे।
आश्वासन के पोटलियों को बोझकर
धबराने की आदते छोड़नी होगी अब।

कालिदास ने कहा है डालिया न काटे
पछतावे के आग तले जल जाओगे।
अपने गलतियों को छुपाकर,
दूसरों के गलतियों को ढूढ़ने वाली,
आदतें छोड़नी होगी अब।

तलवार लेकर वृक्ष काटते-काटते
आँखों में तिनका चुभ जाने पर
पैरों में तलवार की धार पर जायेगी,
खाली पैरों से वृक्ष काटने की,
आदतें छोड़नी होगी अब।

भ्रष्टाचारी होकर, शिष्टाचारी बनने की
आदतें छोड़नी होगी अब।
इमानदारियों की सहयोग से,
भ्रष्ट जन-गण को बहिष्कृत करनी होगी अब,
बुरी आदतों को छोड़नी होगी अब।
नये समाज का गठन करना होगा अब।।

शुप्त जनता को जागृत करना होगा अब,
चिड़ियों की भाँति उन्मुक्त गगन में उड़ना होगा अब,
अनचाहे आदतों को पैरों तले खत्म करना होगा अब,
जनता को ही गणतंत्र की रक्षा करना होगा अब,
नई नभ को आंमत्रित करना होगा अब
मोदी के बनाये रास्तों पर चलना होगा अब,
बुरी आदतों को छड़ना होगा अब!!

बचपन

- **आरती बाल्मिकी**
कक्षा - ग्यारवीं (A)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

एक बचपन का जमाना था
खुशियों का खजाना था।

चाहत चाँद को पाने की थी
पर दिल तितली का दिवाना था।।

खबर ना थी, सुबह की
ना सुबह का ठिकाना था
ना शाम का ठिकाना था।

थक कर स्कूल से आना था
पर खेलने भी जाना जरूरी था।

माँ की कहानी थी कुछ कर तुझे
दिखाना हैं।
परियों का फसाना है।

बारिश में कागज की नाव थी
हर मौसम सुहाना था।

एक बचपन का जमाना था
खुशियों का खजाना था।।

जब अज्ञेय को कहा गया अनुवादक...

मृदुला गर्ग

उस पहली मुलाकात के बाद, अज्ञेय से गोष्ठियों में मिलना होता रहा पर साक्षात अकेले मिलना छह बरस बाद तब हुआ, जब 1980 में, मेरा चौथा उपन्यास *अनित्य* छपा। पहला उपन्यास 1975 में छपा था पर मंजुल वाला वाकया दुहराने का मौक़ा न था। दुहराव में तिलिस्म नहीं होता। यूं भी, प्रकाशक द्वारा आयोजित गोष्ठी में, बतौर अध्यक्ष, जैनेंद्र जी आए थे। जैनेंद्र और अज्ञेय के बीच तनातनी अर्से से चल रही थी। सुना था जैनेंद्र ने कहीं अज्ञेय का परिचय अपने अनुवादक की तरह दे डाला था, जिससे जाहिर है, तनातनी और बढ़ गई थी। वात्स्यायन को जैनेंद्र का दिया अज्ञेय उपनाम ही पसंद न था। अपनी नापसंदगी वे छुपाते न थे पर अचरज, उपनाम का प्रयोग करते जाने से भी एतराज न था। दरअसल यह इस बात का सबूत था कि वात्स्यायन नाम का कवि, धरती के ऊपर नहीं, धरती पर विचरने वाला जीव था। मानवीय गुण-दोष संपूर्त।

धरती को अगर प्रकृति या पर्यावरण का पर्याय मानें तो अज्ञेय से ज्यादा कौन था धरती का? पत्ते-पत्ते में उनकी गहरी काव्यात्मक ही नहीं, दार्शनिक रुचि थी। वैज्ञानिक जानकारी भी कम न थी।

कौन-सी वनस्पति कब-कहां उगी, किस जैविक तर्क के तहत पनपी, किस-किस तरह हरियाई और नष्ट हुई, उनसे ज्यादा किसी कवि ने न जाना, न जानने की कोशिश की। प्रकृति का नैसर्गिक संगीत उनके लेखन में यूं तरंगित था कि उसकी सौंदर्यानुभूति ही नहीं, उस में निहित गहन चिंतन भी, प्रकृति के विलक्षण तर्क से प्रेरित होता था।

यही कारण था कि उनके अतुल्य और विपुल गद्य साहित्य के बावजूद, अंतत: उनके नाम के साथ कवि शब्द उपनाम की तरह जुड़ा, जैसे रवींद्रनाथ ठाकुर के साथ कविवर गुरुदेव या शेक्सपीयर के साथ द बार्ड। 1980 में तमिल लेखक पोट्टेकट को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था। उस उपलक्ष्य में शाम के चाय-पान में मंजुल और मेरी मुलाकात, अज्ञेय और पोट्टेकट से एक साथ हुई। चित्र खींचे जा रहे थे। पता नहीं अज्ञेय को क्या सूझा कि मंद स्मित के साथ, मंजुल और मेरे एक तरफ खड़े हो गए, पोट्टेकट को दूसरी तरफ खड़े होने को इशारा करके बोले, हम इनके द्वारपाल हो जाएं। यह हंसी - मजाक कितना दुर्लभ था, मैंने बाद में समझा।

वहीं उन्होंने मुझे बतलाया कि किसी पत्रिका में मेरे उपन्यास की समीक्षा निकली थी, कहा, बड़ी तारीफ की है आपकी। फिर जोड़ा, घर आएं तो बात हो सकती है। मुझ कूढ़मग्ज़ की समझ में भी आ गया कि उपन्यास उन्होंने पढ़ लिया है।

मै तिपहिया ले कर, केवेंटर ईस्ट, उनके बंगले पर पुहंची; यह वक्त से पांच मिनट बाद। शहर के शहरीपन की कैद से छूटा, गजब इलाका था। घर था कि मिल नहीं रहा था। मैं वक्त की पाबंदी का सबक घुट्टी में पिए थी, लिहाजा तिपहिए से उतरते ही, आकुल स्वर में, देर से आने के लिए माफी मांगी। उनके चेहरे पर मुस्कान-सी छलकी, एक भौंह ने हरकत की और वे बोले, आइए। मुझे लगा, सिर्फ पांच मिनट की देरी के लिए क्षमा मांगना उन्हें भाया है। जहां तक मुझे याद है, रमेशचंद्र शाह तथा कुछ अन्य जन बाहर बरामदे में थे।

अज्ञेय मुझे सीधे बैठक में ले गए। सबसे पहले जो उन्होंने कहा, उससे अचरज भी हुआ और उनकी छवि की तराश भी बिगड़ी। कहा कि मेरे पिछले अपन्यास *चित्तकोबरा* पर सारिका में बहस पढ़ी थी, पर उपन्यास नहीं। *अनित्य* पढ़ने के बाद *चित्तकोबरा* मंगा कर पढ़ी। चकित, मैं सोच रही थी, अगर अज्ञेय जैसा मनमौजी और दबंग व्यक्ति, सारिका की फूहड़ टिप्पणियों से प्रभावित हो, *चित्तकोबरा* पढ़ने से परहेज कर सकता था तो आम जन का क्या हाल हुआ होगा? तब तक चुप्पी का पाठ हृदयंगम कर लिया था, सो अपनी भवों को तनिक ऊपर उठा, सम पर ले आई पर कुछ कहा नहीं।

अज्ञेय ने क्षणांश को मुझे ताका। एक छाया चेहरे पर थिरक कर गुजर गई, जैसे पत्ता खड़का हो। फिर वे *अनित्य* पर बात करने लगे। बहुत बातें हुई, दुहराना बेकार है, कोई गवाह है नहीं।

कुछ दिन पहले चंद्रकांत बांदिवडेकर ने मुझसे कहा कि *अनित्य* अज्ञेय को पसन्द आया था, पर उसका भी कोई गवाह नहीं है, सो आपका मानना, न मानना, दोनों उचित होंगे। हां, उस बातचीत में एक दिलचस्प प्रसंग था, जिसे बांटना चाहती हूं। स्मृति में अटका है, ज्यों का त्यों।

उपन्यास के *अनित्य* नामक पात्र के बारे में उन्होंने कहा कि कैसा मोहभंग है उसका, जब वह बार-बार लौट आता है। प्रतिवाद में मैंने कहा, यही तो अंतर है यायावर और संन्यासी में।

संन्यासी जाता है तो लौटता नहीं, यायावर लौट आता है। तभी तो यायावर कहलाता है, नहीं?

साभार: प्रात: खबर

हिंदी हो चुकी अब विश्व भाषा

आर. के. सिंहा

अब आप न्यूयार्क से लंदन और न्यूजीलैंड से नाइजीरिया, सिंगापुर से सिडनी, फिजी से फिनलैंड, म्यांमार से मारीशस कहीं भी चले जाइए आपको हिंदी सुनने को मिल ही जाएगी। बाजारों, मॉल्स, यूनिवर्सिटी कैंपस, एफएम रेडियो और दूसरे सार्वजनिक स्थानों पर लोग-बाग हिंदी में बातचीत करते हुए मिल ही जाएंगे। यानी कि हिंदी ने एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपना स्थान बना लिया है। इसकी दो-तीन वजहें समझ आ रही हैं। पहली, पूरी दुनिया में करीब डेढ़ से ज्यादा प्रवासी भारतीय बसे हुए हैं। ये आपको संसार के हर बड़े-छोटे शहरों में मिल ही जाएंगे। ये भारतीय अपने साथ हिंदी भी लेकर बाहर गए हैं। भले ही तमिलनाडू का कोई शख्स भारत में तमिल में ही बतियाता हो, पर देश से बाहर वो किसी अन्य भारतीय के साथ हिंदी ही बोलता है। उससे भी मिस्त्र, मलेशिया, थाईलैंड, खाड़ी और अफ्रीकी देशों में एयरपोर्ट पर मिलने वाले टूरिस्ट गाइड से लेकर होटलों का स्टाफ तक भी, भले ही टूटी-फूटी हिंदी में ही सही, संवाद स्थापित करने कि कोशिश करते हैं। दरअसल, जैसे ही हम भारतीय किसी अन्य देश के एयरपोर्ट से बाहर निकलते हैं हमें भारतीय के रूप में पहचाना जाने लगता है। आपको 'क्या हालचाल है?' 'भारतीय हो?' 'कैसे हो?' 'नमस्ते' 'प्रणाम' जैसे छोटे वाक्य और शब्द सुनने को मिलने लगते हैं। दूसरा, अब भारतीय भी दुनियाभर में घूम रहे हैं। चूंकि इनकी आर्थिक स्थिति अब सुधर रही है। ये दुबई से लेकर डरबन तक हवाई से ऑस्ट्रेलिया तक जा रहे हैं, दुनिया देखने के लिए, मौज-मस्ती करने के लिए। इसलिए इन धनी हिंदुस्तानियों को प्रभावित करने के लिए तमाम देशों के पर्यटन उद्योग से जुड़े लोग कुछ हिंदी सीख रहे हैं। मैं हाल के दौर में स्काटलैंड, लंदन से लेकर सिंगापुर और ऑस्ट्रेलिया गया अपने कामकाज के सिलसिले में। मुझे थोड़ी बहुत हिंदी बोलते हुए अफ्रीकी देशों के अधिकांश नागरिक मिले। लंदन में केन्या मूल के एक कारोबारी मिले। मैंने उन्हें बातचीत में बताया कि मैं भारत से हूं। इस पर वे कलेजे पर हाथ रखकर कहने लगे, 'भारत तो मेरी जान है। मैं जयपुर में पढ़ा हूं।' चेस कैनयाटा नाम के वे सज्जन गुजारे लायक हिंदी जानते-समझते थे।

एक बार मैं मारीशस की राजधानी पोर्ट लुईस के व्यस्त बाजारों, के बीच पैदल निकल रहा था कि कोई पुकार आई, 'आईए आईए, एकदम सस्ता है, बढ़ियां है।' मैंने दायें-बाएं देखा, सारी दुकानों पर चाइनीज ही बैठे नजर आए, तब तक कपड़े की एक दुकान से एक बूढ़े चाइनीज ने इशारा किया, 'अंदर आ जाइए।' मैं अंदर गया और पहला प्रश्न पूछा, 'आपको हिंदी, आती है क्या?' चाइनीज दुकानदार मुस्कुराया और बोला, मॉल बेचना है तो हिंदी भी तो सीखना ही पड़ता है न? यहां भारतीय बड़ी संख्या में आते हैं, फ्रेंच और अंग्रेज के बराबर ही। तो मुझे तो चाइनीज के अलावा फ्रेंच, अंग्रेजी हिंदी और क्रियोल (स्थानीय अफ्रीकी) सभी कुछ बोलना ज़रूरी होता है। नहीं तो मेरा मॉल बिकेगा कैसे? यह है बाजारवाद की मजबूरी। जब हिंदी भाषी खरीददारों में शामिल हो गए तो बाज़ार को हिंदी सीखनी पड़ी। यकीन मानिए हिंदी को जानने-समझने की लालसा समूचे संसार में देखी जा रही है। बेशक हिंदी प्रेम और मानवीय संवेदनाओं की बेजोड़ भाषा है। लगभग सभी टैक्सी वाले भी कुछ न कुछ हिंदी समझ लेते हैं। कम से कम एकाध लाइन हिंदी फिल्मों का गाना तो गुनगुना ही देते हैं। इसके साथ ही भारत की पुरातन संस्कृति, इतिहास और बौद्ध धर्म से संबंध भी स्वाभाविक रूप से बाकी विश्व को हिंदी भारत से जोड़ते हैं। कम ही लोगों को मालूम है कि टोक्यो यूनिर्विसिटी में 108 वर्ष पूर्व सन 1908 में ही हिंदी के उच्च अध्यन का श्रीगणेश हो गया था। कुछ साल पहले इस विभाग ने अपनी स्थापना के 100 साल पूरे किए। जापान में भारत को लेकर जिज्ञासा के बहुत से कारण रहे। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर चार बार वहां की यात्रा पर गए। बौद्ध धर्मावलंबी देशों के लोगों का भारत से स्वाभाविक संबंध तो रहा ही हैं। अब तो जापानी मूल के लोग ही टोक्यो यूनिवर्सिटी में हिंदी भी पढ़ा रहे हैं। क्या यह छोटी बात हैं? वहां पर हर वर्ष करीब 20 विद्यार्थी हिंदी में स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए दाखिला लेते हैं। अमरीका के भी येले, न्यूयार्क, विनकांसन वगैरह विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। इनमें छात्रों की तादाद भी लगातार बढ़ती जा रही है। वहां भी अमरीकी या भारतीय मूल के अमरीकी नागरिक ही हिंदी अध्यापन कर रहे हैं।

जर्मनी और पूर्व सोवियत संध और उसके सहयोगी देशों जैसे पोलैंड, हंगरी, बुल्गारिया, चेकोस्लोवाकिया बगैरह में भी हिंदी के अध्यन की लंबी परंपरा रही है। कुछ दिन पहले जर्मनी के ट्यूबिन्यन विश्वविद्यालय में कार्यरत प्रोफेसर दिव्यराज अमिय मुझसे मिलने आए थे। वे बता रहे थे कि जर्मन मूल के हिंदी और संस्कृत के प्राध्यापक जितने गंभीर और गहरे भाषा विज्ञान के विशेषज्ञ हैं उतने तो

भारतीय मूल वाले प्राध्यापक भी नहीं हैं। एक दौर में सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के बहुत से देशों और भारत की नैतिकताएं और मान्यताएं भी लगभग समान थी। वहां पर कम्युनिस्ट व्यवस्था थी, जबकि भारत में नेहरुवियन सोशलिज्म का प्रभाव था। दुनिया के बहुत से नामवर विश्वविद्यालयों में हिंदी चेयर इंडियन काउंसिल आफ कल्चरल रिलेशंस (आईसीसीआर) के प्रयासों से ही स्थापित हुई। इनमें साउथ कोरिया के बुसान और सियोल विश्वविद्यालयों के अलावा पेइचिंग, त्रिनिडाड, इटली, बेल्जियम, स्पेन, तुर्की, रूस वगैरह के विश्वविद्यालय शामिल हैं। उधर साउथ कोरिया में हिंदी को सीखने की वजह विशुद्ध बिजनेस संबंधी है। दरअसल वहां की अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में तगड़ा निवेश कर चुकी हैं। इनमें हुंदुई, सैमसंग, एलजी शामिल हैं। भले ही हिंदी के लिए यहा कहा जाता रहे कि यह रोजी-रोटी के साथ न जुड़ी हो, पर प्रेम, संस्कृति और मानवीय संवेदना की भाषा के रूप में तो इसने अपने लिए हर देश में जगह बना ली है। उसी के चलते हर साल हजारों विदेशी हिंदी का अध्ययन करते हैं। अब तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भी कई विभागों जैसे मार्केटिंग, प्रोक्योरमेन्ट और कस्टमर रिलेशन्स में काम करने वालों के लिए काम चलाऊ हिंदी का ज्ञान अनिवार्य बना दिया है और इसके लिए बाकायदा क्लासेज भी लगाई जाती हैं। जब से चीनी कंपनियों ने भारत के बाजार में तेजी से अपनी पैठ बनाना शुरू किया है, सुनने में आ रहा है कि अब चीनी कंपनियों ने पाकिस्तानियों को नियुक्त करना शुरु कर दिया है जो कि चीनी व्यवसायियों और प्रबंधकों को हिंदी सिखा रहे हैं। देश से बाहर हिंदी को स्थापित करवाने में कई विदेशी विद्वानों का योगदान भी उल्लेखनीय रहा है।

साभार - पूर्वांचल प्रहरी

पूस की रात

प्रेमचंद

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा - सहना आया है। लाओ, जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे।

मुन्नी झाड़ लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली - तीन ही तो रुपये हैं, दे दोगे तो कम्बल कहाँ से आवेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी? उससे कह दो, फसल पर दे देंगे। अभी नहीं।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस सिर पर आ गया, कम्बल के बिना रात को वह किसी तरह सो नहीं सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा। बला से जाड़ों में मरेंगे, बला तो सिर से टल जाएगी। यह सोचता हुआ वह अपना भारी भरकम डील लिये हुए (जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला - ला दे दे, गला तो छुटे। कम्बल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूंगा।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गयी और आँखें तरेरती हुई बोली - कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूं तो कौन उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कम्मल? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आये। मैं रुपये न दूंगी!

हल्कू उदास होकर बोला - तो क्या गाली खाऊँ!

मुन्नी ने तड़पकर कहा - गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौंहें ढीली पड़ गई। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जंतु की भाति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रुपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिये फिर बोली - तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धोंस।

हल्कू ने रुपये लिये और इस तरह बाजार चला, मानो अपना हृदय निकाल कर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-काटकर तीन रुपये कम्बल के लिए जमा किए थे। वह आज निकले जा रहे थे। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

2

पूस की अंधेरी रात! आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बांस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े पड़े काँप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबर पेट में मुँह डाले सर्दी से कूं-कूं कर रहा था। दो में से एक को भी नींद न आती थी।

हल्कू ने घुटनियों को गरदन में चिपकाते हुए कहा - क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो

यहाँ क्या लेने आये थे। अब खाओ ठंड, मैं क्या करूं। जानते थे, मैं वहाँ हलुवा-पूरी खाने आ रहा हूँ, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आये। अब रोओ नानी के नाम को।

जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलायी और अपनी कूं-कूं को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान बुद्धि ने शायद ताड़ लिया, स्वामी का मेरी कूं-कूं से नीद नहीं आ रही है।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा - कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह राँड पछुआ न जाने कहां से बरफ लिये आ रही है उठूं, फिर एक चिलम भरूं। किसी तरह रात तो कटे! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है! और एक भगवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाए तो गरमी से घबड़ाकर भागे! मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ, कम्बल, मजाल है, जाड़े का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!

हल्कू उठा, गड्ढे में से जरा-सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा - पिएगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, हाँ जरा, मन बदल जाता है!

जबरा ने उसे मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा।

हल्कू - आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहाँ पुआल बिठा दूँगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।

जबरा ने अपने पंजे उसी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुँह के पास अपना मुँह लगया। हल्कू को उसकी गर्म साँस लगी।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा; पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कम्पन होने लगा। कभी इस कवट लेटता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था।

जब किसी तरह न रहा गया, उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थप-थपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गन्ध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद में चिमटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्तें के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुंचा दिया। नहीं, इस अनौखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वारा खोल दिए थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छपरी के बाहर आकर भूंकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया, पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़-दौड़कर भूँकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरन्त ही फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके हृदय में अरमान की भांति उछल रहा था।

3

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा से धधकना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रही है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है! सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जाएँगे तब कहीं सवेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग था। पतझड़ शुरु हो गई थी। बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, चरकर पत्तियां बटोरूँ और उन्हें जलाकर खूब तापूँ। रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देखे तो समझे; कोई भूत है। कौन जाने, कोई जानवर ही छिपा बैठा हो, मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पोधे उखाड़ लिए और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिए बगीचे की तरफ चला। जबरा ने उसे आते देखा, पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा - अब तो नहीं रहा जाता जबरू! चलो, बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें। टांटे हो जाएँगे, तो फिर आकर सोएँगे। अभी तो बहुत रात है।

जबरा ने कूँ-कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में खूब अँधेरा छाया हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूँदें टपटप नीचे टपक रही थी।

एकाएक एक झोंका मेंहदी के फूलों की खुशबू लिये हुए आया।

हल्कू ने कहा - कैसी अच्छी महक आई जबरू! तुम्हारी नाक में भी कुछ सुगंध आ रही है?

जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी। उसे निचोड़ रहा था।

हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा। जरा देर में पत्तियों का ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पांव गले जाते थे। और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा।

थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपरवाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अन्धकार को अपने सिरों पर संभाले हुए हों। अन्धकार के उस आनन्द सागर से यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता; मचलता हुआ जान पड़ता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दोहर उतारकर बगल में दबा ली, दोनों पाँव फैला दिए, मानो ठंड को ललकार रहा हो, 'तेरे जी में आए सो कर।' ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय-गर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा - क्यों जब्बर, अब ठंड नहीं लग रही है?

जब्बर ने कूँ-कूँ करके मानो कहा - अब क्या ठंढ लगती ही रहेगी?

'पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।'

जब्बर ने पूँछ हिलायी।

'अच्छा आओ, इस अलाव को कूदकर पार करें। देखें, कौन निकल जाता है। अगर जल गए बचा, तो मैं दवा न करूँगा।'

जब्बर ने उस अग्नि-राशि की ओर कातर नेत्रों देखा!

'मुन्नी से कल न कह देना, नहीं लड़ाई करेगी।'

यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफ निकल गया! र में जरा लपट लगी, पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द घूमकर उसके पास आ खड़ा हुआ।

हल्कू ने कहा - चलो-चलो, इसकी सही नहीं! ऊपर से कूदकर आओ। वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया!

4

पत्तियाँ जल चुकी थीं। बगीचे में फिर अन्धेरा छाया था। राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जरा आग उठती थी, पर एक क्षण में फिर आँखें बन्द कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गई थी, पर ज्यों-ज्यों शीत बढ़ती जा ती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था।

जबरा जोर से भूँककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुण्ड उसके खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुण्ड था। उनके कूदने-दौड़ने की आवाजें साफ कान में आ रही थी। फिर ऐसा मालूम हुआ कि खेत में चर रही हैं। उनके चबाने की आवाज चर-चर सुनाई देने लगी।

उसने दिल में कहा - नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डाले। मुझे भ्रम हो रहा है। कहाँ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ।

उसने जोर से आवाज लगायी - जबरा, जबरा।

जबरा भूंकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था। कैसा दंदाया हुआ बैठा था। इस जाड़े-पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछ दौड़ना असह्य जान पड़ा। वह अपनी जग से न हिला।

उसने जोर से आवाज लगायी - हिलो! हिलो!! हिलो!!!

जबरा फिर भूँक उठा। जावर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते है!

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभनेवाला, बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नीलगायें खेत का सफाया किए डालती थी और हल्कू गर्म राख के पास शाँत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था।

उसी राख के पास गर्म जमीन पर वह चादर ओढ़कर सो गया।

सबेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी - क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा - क्या तू खेत से होकर आ रही है?

मुन्नी बोली - हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला, ऐसा भी कोई सोता है। तुम्हारे यहाँ मड़ैया डालने से क्या हुआ?

हल्कू ने बहाना किया - मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दरद हुआ, ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ!

दोनों फिर खेत के डाँड़ पर आये। देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है और जबरा मँड़ेया के नीचे चित लेटा है, मानो प्राण ही न हो।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख उदासी छायी थी, पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा - अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा - रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।

ऑयल में हिन्दी माह/पखवाड़ा/सप्ताह का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड ने अपने क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान के साथ ही अन्य सभी कार्यालयों में प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी भारत सरकार के आदेशों के अनुपालन एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए एवं लोगों को राजभाषा के प्रति आकृष्ट करने के उद्देश्य से हिन्दी माह/पखवाड़ा/सप्ताह का आयोजन किया।

क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में हिन्दी माह की शुरुआत 01 सितम्बर 2016 को की गई। इसकी शुरुआत निबंध लेखन प्रतियोगिता से की गई। श्री दिलीप कुमार दास, प्रमुख (जनसंपर्क) ने कार्यक्रम को प्रारंभ करते हुए उपस्थित सभी प्रतिभागियों से अपील की कि वे अपने कार्यालय में अपना काम हिन्दी में करने का प्रयास करें ताकि हिन्दी का विकास सुचारू रूप से हो सके और दूसरों पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़े। पूरे माह के दौरान विभिन्न वर्गों में अधिकारियों, कर्मचारियों तथा पहली बार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान के सदस्यों के लिए भी अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताओं यथा :- हिन्दी निबंध लेखन, हिन्दी वाद-विवाद, हिन्दी पत्र लेखन, टिप्पण एवं अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी श्रुतिलेखन एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसके अलावा दुलियाजान में स्थित विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए भी हिन्दी भाषा ज्ञान प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। वर्ष 2016-17 के लिए ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में हिन्दी माह समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 30-09-2016 (शुक्रवार) को ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग, दुलियाजान के ऑडिटोरियम में किया गया। राजभाषा विभाग की नीतियों एवं निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करते हुए इन प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को दिनांक 30-09-2016 को आयोजित इस समारोह में विभिन्न गणमान्य अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

डॉ. शैलेश त्रिपाठी, सहायक हिन्दी अधिकारी ने सभागार में उपस्थित लोगों का स्वागत जर्मन कवि ओदोलेन स्मेकल की एक कविता से करते हुए अपने विचार रखें। उन्होंने कहा कि हमारी अपनी भाषा ही हमारे विचारों की श्रेष्ठ वाहक हो सकती है, अर्थात आप अपना अध्ययन, चिंतन, लेखन चाहे किसी की भाषा में करें लकिन जब आप कुछ सोचना चाहेगें मौलिक रूप से, तो फिर आप को अपनी भाषा के ही पास जाना होगा। इसका सीधा सा अर्थ है कि यदि हम कुछ मौलिक एवं श्रेष्ठ करना चाहते हैं तो उसे हम अपनी भाषा के माध्यम से ही कर सकते हैं। तत्पश्चात् उन्होंने ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए किये जाने वाले कार्यों से जनसमूह को अवगत कराया।

कार्यक्रम की शुरुआत कार्यकारी निदेशक, श्री अनुप कुमार गोगोई (उत्पादन सेवाएं), ऑयल, श्री प्राणजीत डेका, महाप्रबंधक (जन कार्य) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री डी. के दास, उप महाप्रबंधक (सीएसआर) एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. सूर्य कांत त्रिपाठी, एसोसियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग तेजपुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय का पुष्पगुच्छ एवं फूलमगमछा से पारंपरिक स्वागत करते हुए की गई।

कार्यक्रम को उद्घाटित करते हुए श्री प्राणजीत डेका, अध्यक्ष, राजभाषा कार्यन्वयन समिति ने सर्वप्रथम पुरस्कार विजेताओं को बधाई देने के साथ ही अपने विचारों को रखते हुए कहा कि हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाने के संवैधानिक उद्देश्यों को पूरा किया जाना सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिंदी में टिप्पण तथा पत्राचार को पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित किया जाए। यह सर्वविदित है कि हिन्दी देश की मुख्य संपर्क भाषा बन चुकी है और हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी है। अब तो टेलिविजन ही नहीं इंटरनेट तथा मोबाइल जैसे सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों ने समूचे विश्व को एक परिवार में बदल दिया है। यह खुशी की बात है कि इन साधनों में भी अब हिन्दी भाषा अपनी पैठ बनाती जा रही है जन-जन में लोकप्रिय हो रही है। साथ ही महाप्रबंधक महोदय ने ऑयल में हिन्दी की गतिविधियों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी कंपनी ऑयल इंडिया लिमिटेड भी भारत सरकार की राजभाषा नीति के पूर्ण क्रियान्वयन के प्रति संकल्पित है। हमने कई सकारात्मक कदम उठाए हैं। उदाहरण स्वरूप कंपनी, नराकास, दुलियाजान की अध्यक्षता कई वर्षों से पूरी ईमानदारी के साथ निभा रही है तथा इसकी सराहना चारों ओर हो रही है। दिशा में विगत वर्षों में अनेक रचनात्मक एवं गुणात्मक कार्य किये गये हैं। चाहे वह प्रशिक्षण के लिये उत्कृष्ट प्रोत्साहन योजना हो, तकनीकी विषय पर हिन्दी में पुस्तक लेखन के लिये प्रोत्साहन राशि हो, गुवाहाटी विश्वविद्यालय में असमिया-हिन्दी साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन पर श्रीमंत शंकर देव फेलोशिप की स्थापना हो इत्यादि।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे डॉ. सूर्य कांत त्रिपाठी, एसोसियेट

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेजपुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, ने मानव जीवन में भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को शाब्दिक रूप देकर किसी दूसरे तक अपनी बात आसानी से पहुंचा सकते हैं, यही मुख्य कारण है कि आज के व्यापारिक वर्ग को अपने उत्पादनों की बिक्री के लिए हिन्दी का सहारा लेना ही पड़ता है क्योंकि आज के समय में हिन्दी की पहुँच भारत के हर कोने तक हो गई है। उन्होंने आज के समय में फेसबुक, व्हाट्सअप आदि विभिन्न संचार माध्यमों पर प्रचलित हो रही हिन्दी पर भी अपने विचार रखे।

डॉ. सूर्यकांत के पश्चात ऑयल इंडिया लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक (उत्पादन सेवाएं) श्री अनुप कुमार गोगोई ने हिन्दी की दिशा एवं दशा पर अपने विचार व्यक्त किए। अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री गोगोई ने कहा कि 14 सितंबर 1949 भारत के इतिहास का वह गौरवशाली दिन है जिस दिन हमारे संविधान में हिंदी को, भारत की राजभाषा के रूप में पहचान मिली थी। हमारे संविधान में केन्द्र सरकार के कामकाज के लिए हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई और राज्य सरकारों के लिए प्रांतीय भाषाओं को स्वीकार किया गया। राष्ट्र और जन हित में हमें सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी तथा राज्यों के कामकाज में उनकी प्रांतीय भाषा का समावेश करना होगा। हिन्दी देश की संपर्क भाषा और राजभाषा दोनों ही है। हमें हिन्दी भाषा पर गर्व होना चाहिए। हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा बन चुकी है। इसलिए शासन के कामकाज में भी राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। राजभाषा हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं के माध्यम से ही सरकार की विकास योजनाओं को उसके लक्ष्य तक पहुंचाया जा सकता है।

तत्पश्चात इस माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता के विजयी नराकास के सदस्यों/ऑयल के अधिकारियों/ कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं के बीच पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम संपन्न हुआ और विभिन्न प्रतियोगिता के निर्णायकों को भी सहयोग के लिए पुरस्कृत किया गया। इसके साथ ही ऑयल की प्रतिष्ठित अंतर क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड एवं अंतर विभागीय राजभाषा शील्ड के विजेता क्षेत्रों/विभागों को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। जन कार्य विभाग के उप महाप्रबंधक (सी एस आर), श्री दिलीप कुमार दास के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही संचालक डॉ. शैलेश त्रिपाठी द्वारा कार्यक्रम के औपचारिक समापन की घोषणा की गई।

हिन्दी माह 2016 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों के कुछ छायाचित्र

हिन्दी माह 2016 की शुरुआत निबंध लेखन प्रतियोगिता के साथ की गई, निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी गण।

पूरे माह के दौरान हिन्दी की अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। वाद-विवाद प्रतियोगिता में उपस्थित निर्णायक गण एवं अपना-अपना पक्ष रखते हुए प्रतिभागी

हिन्दी माह के दौरान दुलियाजान एवं आस-पास के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी भाषा ज्ञान की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में भाग लेते विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थी।

हिन्दी डिक्टेशन (श्रुतिलेखन) की प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागीगण।

हिन्दी माह के दौरान हिन्दी प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया था जिसमें प्रतिभागियों ने बड़े ही उत्साह से भाग लिया। श्री अभिजीत आनन्द प्रतियोगिता का आयोजन करते हुए एवं प्रतियोगिता में शामिल टीमें।

तत्पश्चात हिन्दी माह के दौरान आयोजित विभिन्न रचनात्मक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को कार्यकारी निदेशक, श्री अनुप कुमार गोगोई (उत्पादन सेवाएं), ऑयल, श्री प्राणजित डेका, महाप्रबंधक (जन कार्य) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री डी. के. दास, उप महाप्रबंधक (जी एन आर) एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी, एसोसियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेजपुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने पुरस्कृत किया।

इसके साथ ही हिन्दी माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के माननीय निर्णायकों को भी ऑयल परिवार ने उनके सहयोग एवं समर्पण के लिए स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

ऑयल इंडिया लिमिटेड का क्षेत्र मुख्यालय प्रत्येक वर्ष अपने अन्तर-क्षेत्रीय कार्यालयों एवं क्षेत्र मुख्यालय में विभिन्न विभागों के मध्य राजभाषा में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले विभाग एवं कार्यालय को ऑयल की प्रतिष्ठित राजभाषा शील्ड प्रदान करता है, इस वर्ष इस शील्ड के विजेता हैं।

अंतर-क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड :

प्रथम – पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

द्वितीय – शाखा कार्यालय, कोलकाता

अंतर-विभागीय राजभाषा शील्ड:

प्रथम – अनुसंधान एवं विकास विभाग

द्वितीय – रसायन विभाग

तृतीय – डिग्बोई तेल क्षेत्र, डिग्बोई

तृतीय – ओ जी पी एल विभाग

कार्यकारी निदेशक, श्री अनुप कुमार गोगोई (उत्पादन सेवाएं), ऑयल, अंतर-क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए।

कार्यकारी निदेशक, श्री अनुप कुमार गोगोई (उत्पादन सेवाएं), ऑयल, एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी, एसोसियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेजपुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय अंतर-विभागीय राजभाषा शील्ड के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए।

श्री दिलीप कुमार दास, उप महाप्रबंधक (सीएसआर) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही वर्ष 2016 का हिन्दी माह समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ।

कलकत्ता शाखा में हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कलकत्ता शाखा कार्यालय में दिनांक 01-09-2016 से 15-09-2016 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से नवीन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तत्क्षण आशुभाषण प्रतियोगिता, कार्यालयीन हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता, कम्प्यूटर हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता, हिन्दी हस्ताक्षर तथा हिन्दी क्विज़ प्रतियोगिता में कार्मिकों नें पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। पखवाड़े का उद्घाटन एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के साथ हुआ। दिनांक 01-09-2016 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 14 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में विशेष रूप से डॉ रमेश मोहन झा, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, कलकत्ता शाखा बतौर संकाय उपस्थित हुए। उनके अनुभव का लाभ सभी उपस्थित अधिकारियों नें उठाया। दिनांक 22-09-2016 को भव्य समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। खचाखच भरे कर्मचारी रिक्रेशन हॉल में कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए कार्यालय के प्रमुख श्री ए पॉल ने सभी उपस्थित विद्वजनों का स्वागत किया तथा सभी कार्मिकों से अपील की कि वे अपना ज्यादा से ज्यादा कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिन्दी में करें। उन्होंने यह भी कहा कि कलकत्ता शाखा के अधिकांश कार्मिक हिन्दीतर भाषी हैं परंतु उनके द्वारा अपने काम हिन्दी में करने का प्रयास सदैव किया जाता है, उन्होंने यह भी कहा कि कार्यालय के अधिकांश अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यालय में प्राप्त होने वाले पत्रों पर हिन्दी में हस्ताक्षर करते हैं तथा उन पर टिप्पणी भी हिन्दी में लिखने का यथासम्भव प्रयास करते हैं। उन्होंने कार्यालय के कार्मिकों को विशेष रूप से बधाई दी कि उन सभी के साझा प्रयास की बदौलत कलकत्ता शाखा कार्यालय को 11-08-2016 को लगातार तीसरे वर्ष पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम श्री केसरी नाथ त्रिपाठी जी के करकमलों से हिन्दी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त करने का अवसर मिला। कार्यक्रम के दौरान श्री पिनाकी रंजन रॉय, श्री एस के चौधुरी, श्री गोपाल चक्रवर्ती, श्री अमोल भट्टाचार्य, श्री शुभेन्दु चट्टोपाध्याय, श्री विल्सन, श्री अलोक दंड, श्री मानवेन्द्र चौधुरी, श्री सुमंत चैटर्जी, श्रीमती अपराजिता गोगोई तथा श्रीमती गीता घोष द्वारा कविताएं / गीत / विचार प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम के अंत में सभी पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। श्री अंशुमन रॉयचौधुरी, मुख्य प्रबन्धक सामग्री (क्रय) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं एवं समापन समारोह के कुछ छाया चित्र।

पाइपलाइन विभाग में हिन्दी समारोह-2016 का आयोजन

भारत सरकार के गृह मंत्रालय अंतर्गत राजभाषा विभाग के दिशा-निदेशानुसार कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं लोगों को राजभाषा के प्रति आकृष्ट करने के उद्देश्य से 01 सितम्बर, 2016 से 30 सितम्बर, 2016 तक पाइपलाइन विभाग में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हिन्दी माह समारोह, 2016 का भव्य आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ 01 सितम्बर, 2016 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुईतपार क्लब में उद्घाटन एवं राजभाषा संगोष्ठी के आयोजन से हुआ जिसमें पांडू कॉलेज के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ ताराकांत झा तथा राजभाषा विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना, मालीगांव के उपनिदेशक डॉ रूस्तम क्रमश: बतौर मुख्य वक्ता एवं अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) प्रभारी श्री बिजन कुमार मिश्रा तथा आमंत्रित अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी माह समारोह-2016 के विधिवत् उद्घाटन की घोषणा की। ''राजभाषा हिन्दी और उसका महत्व'' शीर्षक पर आयोजित राजभाषा संगोष्ठी में आमंत्रित अतिथि द्वय ने अपने सारगर्भित विचारों से सभागार में उपस्थित सभी को प्रेरित किया।

07 सितम्बर, 2016 को पंप स्टेशन नं. 8 (सोनापुर) में हिन्दी माह समारोह-2016 के अंतर्गत कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता का भी सफल आयोजन सोनापुर क्लब के सभागार में हुआ। उप महाप्रबंधक (प्रचालन) एवं स्टेशन प्रभारी श्री मुकुल चौधुरी, विचारक के रूप में आमंत्रित सोनापुर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के चार अध्यापकों क्रमश: राहुल सिंह, दिलावर हुसैन, रीना पाठक और सुजित कर्मकार एवं पाइपलाइन के उप प्रबंधक (राजभाषा) पाला श्री नारायण शर्मा ने सभागार में उपस्थित लोगों को बारी-बारी से संबोधित किया। श्री शर्मा ने संपर्क भाषा, व्यवसायिक भाषा में हिन्दी के बढ़ते हुए महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी दूसरे पायदान पर है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के दिशा-निदेशों का उल्लेख करते हुए श्री शर्मा ने कार्यालयीय काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को सुनिश्चित करने का आग्रह किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में क्वीज मास्टर के रूप में विद्युत अभियंता (विद्युत एवं कैथोडिक) श्री गंगा राम डेका ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

09 सितम्बर, 2016 को पाइपलाइन के पंप स्टेशन नं. 3 (जोरहाट) में हिन्दी माह समारोह-2016 के अंतर्गत कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। स्टेशन प्रभारी,

उप महाप्रबंधक (प्रचालन) श्री दिलीप कुमार सैकिया, आमंत्रित मुख्य अतिथि नराकास, जोरहाट के सदस्य सचिव अजय कुमार एवं पाइपलाइन मुख्यालय के उप प्रबंधक (रा.भा) पाला श्री नारायण शर्मा ने बारी-बारी से भोगदोई क्लब के सभागार में उपस्थित लोगों को संबोधित किया। हिन्दी भाषा की उपयोगिता और राजभाषा के रूप में दैनन्दिन कार्यालयी काम-काज में इसके प्रयोग को बढ़ाने की तीनों वक्ताओं ने अपील की। कार्यक्रम का संचालन उप प्रबंधक (रा.भा) के तत्वावधान में श्री कामेश्वर सॉव, मुख्य अभियंता (पाला अनुरक्षण) ने किया। बच्चें, गृहिणीयां एवं अधिकारी व कर्मचारियों की उत्साह पूर्वक भागीदारी ने कार्यक्रम को जीवंत बना दिया। खुला मंच प्रश्नोत्तरी का संचालन श्री धीरज लांगथाशा, वरि. अभियंता, सफलता पूर्वक किया।

19 सितम्बर, 21 सितम्बर, 22 सितम्बर एवं 23 सितम्बर 2016 को पाइपलाइन मुख्यालय में क्रमश: खुलामंच प्रश्नोत्तरी (क्वीज), अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए श्रुतलेख, आशुभाषण प्रतियोगिता एवं विभिन्न वर्गों में हिन्दी कविता पाठ, बच्चों के लिए श्रुतलेख, प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया।

30 सितम्बर, 2016 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुईतपार क्लब सभागार में अपराह्न 1-30 बजे से हिन्दी माह समारोह-2016 का

समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त अवसर पर गुवाहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अच्युत शर्मा मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित थे। समूह महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्रा ने अपने संबोधन में पाइपलाइन मुख्यालय में राजभाषा हिन्दी के नियम और अधिनियम के अनुपालन की स्थिति पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि हमें कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को और बढ़ावा देना चाहिए। मुख्य अतिथि डॉ अच्युत शर्मा को हिन्दी का प्रखर विद्वान बतलाते हुए उन्होंने सभागार में उपस्थित लोगों से कहा कि डॉ शर्माजी के विचारों से हम सभी लाभान्वित होंगे। आमंत्रित मुख्य अतिथि डॉ अच्युत शर्मा ने ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि में हिन्दी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार एवं क्रमिक विकास पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि ''राष्ट्र की एकता अखण्डता में हिन्दी भाषा की महती भूमिका है। क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण की वकालत करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषा को हमें बेहिचक-बेझिझक प्रयोग करना चाहिए। श्रीमंत शंकरदेव का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि असम को शेष भारत से और शेष भारत को असम से परिचित कराने के लिए उन्होंने उस समय एक भाषा की आवश्यकता महसूस की थी और ब्रजावली भाषा को प्रचलन में लाया था। आज विश्व की अनेक भाषाएं लुप्त होने की कगार में है। अत: भाषा संरक्षण में हमें सचेत और सजग रहना चाहिए''।

हिन्दी माह समारोह-2016 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत कुल 86 पुरस्कार विजेताओं को प्रशस्ति पत्र और नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

अंत में उप महाप्रबंधक पाला (प्रशासन) श्री हिरेणचन्द्र बोरा के धन्यवाद ज्ञापन करने एवं शारदीय दुर्गोत्सव की शुभकामनाएं अर्पित करने के साथ ही कार्यक्रम का समापन हुआ।

पाइपलाइन मुख्यालय में हिन्दी माह समारोह-2016 का दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत उद्घाटन करते हुए पांडू कॉलेज हिंदी विभाग के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष डॉ ताराकांत झा एवं राजभाषा विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना के उप निदेशक डॉ रूस्तम राय के साथ महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्रा, उप महाप्रबंधक पाला (प्रशासन) श्री हिरेण चन्द्र बोरा :-

राजस्थान परियोजना, जोधपुर में राजभाषा समारोह आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गतिमान बनाने के उद्देश्य से 01 सितंबर से हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया एवं दिनांक 15 सितंबर, 2016 को पखवाड़ा का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। श्री निरोद रंजन डेका, कार्यकारी निर्देशक (रा.प.), श्री माधुर्ज्य बरुआ, मुख्य प्रबंधक (प्रशासन एवं क.सं.) के साथ-साथ राजस्थान परियोजना कार्यालय के उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस समारोह में भाग लिया। राजभाषा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ कौशल नाथ उपाध्याय। कार्यक्रम की शुरुआत मंच पर विराजमान गण्य-मान्य व्यक्तियों को पारंपरिक पुष्प-गुच्छ से स्वागत के साथ किया गया। श्री हरेकृष्ण बर्मन, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने मंचासिन गण्य-मान्य व्यक्तियों के साथ-साथ उपस्थित सभी सज्जनों का स्वागत किया।

समारोह की अध्यक्षता राजस्थान परियोजना, जोधपुर के कार्यकारी निदेशक श्री निरोद रंजन डेका ने की। उन्होंने अपने भाषण में दैनन्दिन कार्य में राजभाषा हिन्दी को ज्यादा से ज्यादा प्रयोग में लाने हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की। समारोह के मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ कौशल नाथ उपाध्याय ने कहा कि भारतवर्ष की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह सभी भाषाओं को अपने में मिलाकर, अपना बनाकर चलती है। इससे उसके शब्दभंडार में विस्तार हुआ है। आज वह सभी क्षेत्रों में अपना विस्तार कर चुकी है। डॉ उपाध्याय ने राजभाषा के बारे में विस्तारपूर्वक जनाकारी दी एवं ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए गए कार्यों की सराहना की। इसके पश्चात हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित अनुवाद, निबंध, श्रुतिलेख, आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। समारोह के दौरान डॉ मुकेश विश्वास, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी द्वारा खुला मंच प्रश्नोत्तरी का भी संचालन किया गया। श्री अजय कुमार मीणा, प्रशासनिक अधिकारी के आभार प्रकट के साथ समारोह का सफल समापन हुआ।

राजस्थान परियोजना, जोधपुर
'राजभाषा शील्ड' प्रथम स्थान से सम्मानित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जोधपुर द्वारा 'राजभाषा शील्ड' प्रथम स्थान से सम्मानित किया गया। उत्तर पश्चिम रेलवे, जोधपुर के सम्मानित अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ए. पी. शर्मा महोदय के कर कमलों से ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर के कार्यकारी निदेशक श्री निरोद रंजन डेका, मुख्य प्रबंधक (प्रशासन एवं कर्मचारी संपर्क) श्री माधुर्ज्य बरुआ एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री हरेकृष्ण बर्मन ने दिनांक 20 दिसंबर, 2016 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, जोधपुर में आयोजित नराकास बैठक के दौरान यह शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया। ऑयल इंडिया लिमिटेड राजस्थान परियोजना, जोधपुर लगातार दो वर्षों से राजभाषा कार्यान्वयन में प्रथम स्थान पर है जो अपने आप में एक रेकॉर्ड उपलब्धि है।

राजस्थान परियोजना, जोधपुर "राजभाषा मुकुटमणि शील्ड" से सम्मानित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु भारतीय भाषा एवं संस्कृति केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा **'राजभाषा मुकुटमणि शील्ड'** से सम्मानित किया गया। दिनांक 21 से 23 अक्टूबर, 2016 तक दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल में आयोजित तीसवाँ राजभाषा सम्मेलन एवं प्रशिक्षण शिविर के दौरान दार्जिलिंग के सम्मानित जिलाधिकारी (आई.ए.एस), अनुराग श्रीवास्तव महोदय के कर कमलों से ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर के श्री हरेकृष्ण बर्मन, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने दिनांक 23 अक्टूबर को यह शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया। भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार एवं उसके बेहतर कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से भारतीय भाषा एवं संस्कृति केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा इस सम्मेलन का आयोजन किया गया

था। सम्मेलन में राजभाषा हिन्दी के सर्वांगीण विकास पर विचार-विमर्श किया गया। देश के करीब 150 प्रतिभागियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

कलकत्ता शाखा को वर्ष 2015-16 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार एवं डॉ. वी एम बरेजा को प्रशस्ति फलक

दिनांक 11-08-2016 को सम्पन्न हुई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक एवं राजभाषा समारोह में ऑयल इंडिया लिमिटेड के कलकत्ता शाखा कार्यालय को वर्ष 2015-16 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए, समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम श्री केशरी नाथ त्रिपाठी, राज्यपाल पश्चिम बंगाल के कर कमलों द्वारा प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रसंगित पुरस्कार लगातार तीसरे वर्ष प्राप्त करना कार्यालय की उपलब्धि है।

इसके अतिरिक्त इस महत्वपूर्ण अवसर पर खचाखच भरे सम्मेलन कक्ष में विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के अध्यक्षों, निदेशकों की उपस्थिति में डॉ वी. एम. बरेजा, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा) को कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का कार्य कुशलतापूर्वक करने के लिए "प्रशस्ति फलक" भी प्रदान किया गया। कलकत्ता शाखा की ओर से कार्यालय के श्री डी के दत्ता, उप महाप्रबन्धक (कलकत्ता शाखा) एवं डॉ वी एम बरेजा, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा) ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।

स्मरण रहे कि वर्ष 2013-14 तथा 2014-15 में भी कलकत्ता शाखा कार्यालय द्वारा यह प्रतिष्ठित पुरस्कार हासिल किया गया था।

उज्ज्वला

पहल

#GiveItUp

Feel the Joy of Giving

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

जन सम्पर्क विभाग

CIN : L11101AS1959GOI001148